

नमो देव्यै जगद्धात्र्यै शिवायै सततं नमः। दुर्गायै भगवत्यै ते कामदायै नमो नमः॥ नमः शिवायै शान्त्यै ते विद्यायै मोक्षदे नमः। विश्वव्याप्त्यै जगन्मातर्जगद्धात्र्यै नमः शिवे॥

वर्ष ८३ गोरखपुर, सौर माघ, वि० सं० २०६५, श्रीकृष्ण-सं० ५२३४, जनवरी २००९ ई० पूर्ण संख्या ९८६

दिव्य मणिद्वीपमें देवी भुवनेश्वरीकी उपासना

ब्रह्मलोकादूर्ध्वभागे सर्वलोकोऽस्ति यः श्रुतः। मणिद्वीपः स एवास्ति यत्र देवी विराजते॥××× सर्वशृङ्गारवेषाढ्या सुकुमाराङ्गवल्लरी। सौन्दर्यधारासर्वस्वा निर्व्याजकरुणामयी॥ निजसंलापमाधुर्यविनिर्भिर्त्सितकच्छपी । कोटिकोटिरवीन्दूनां कान्तिं या बिभ्रती परा॥ नानासखीभिर्दासीभिस्तथा देवाङ्गनादिभिः। सर्वाभिर्देवताभिस्तु समन्तात्परिवेष्टिता॥××× या यास्तु देवतास्तत्र प्रतिब्रह्माण्डवर्तिनाम्॥

समष्टयः स्थितास्तास्तु सेवन्ते जगदीश्वरीम्। सप्तकोटिमहामन्त्रा मूर्तिमन्त उपासते॥ महाविद्याश्च सकलाः साम्यावस्थात्मिकां शिवाम्। कारणब्रह्मरूपां तां मायाशबलविग्रहाम्॥ ब्रह्मलोकसे ऊपरके भागमें जो सर्वलोक सुना गया है, वही मणिद्वीप है; जहाँ भगवती भुवनेश्वरी विराजमान रहती हैं। वे

भगवती समस्त शृंगारवेषसे सम्पन्न, लताके समान अत्यन्त कोमल अंगोंवाली, समस्त सौन्दर्योंकी आधारस्वरूपा तथा निष्कपट

करुणासे ओतप्रोत हैं। वे अपनी वाणीकी मधुरतासे वीणाके स्वरोंको भी तुच्छ कर देती हैं। वे परा भगवती करोड़ों-करोड़ों सूर्यों तथा चन्द्रमाओंकी कान्ति धारण करती हैं। वे बहुत-सी सिखयों, दािसयों, देवांगनाओं तथा समस्त देवताओंसे चारों ओरसे सदा घिरी रहती हैं। प्रत्येक ब्रह्माण्डमें रहनेवाले जो-जो देवता हैं, उनके अनेक समूह वहाँ स्थित रहकर जगदीश्वरीकी उपासना करते हैं। मूर्तिमान् होकर सात करोड महामन्त्र तथा समस्त महाविद्याएँ उन साम्यावस्थावाली, कारणब्रह्मस्वरूपिणी तथा मायाशबलविग्रह

नूर्तमान् हाकर सात कराड़ महामध्य तथा समस्त महाायबार उन साम्यायस्यायाता, कारणब्रह्मस्यर धारण करनेवाली कल्याणमयी भगवतीकी उपासनामें तत्पर रहते हैं।[श्री**मद्देवीभागवत स्कन्ध १२**]



कल्याण' के सम्मान्य सदस्यों और प्रेमी पाठकोंसे नम्र निवेदन

१-'कल्याण' के ८३वें वर्ष—सन् २००९ का यह विशेषाङ्क 'श्रीमद्देवीभागवताङ्क' आपलोगोंकी सेवामें प्रस्तुत है। इसमें ४८० पृष्ठोंमें पाठ्य-सामग्री और ८ पृष्ठोंमें विषय-सूची आदि है। कई बहुरंगे एवं रेखाचित्र भी

दिये गये हैं। डाकसे सभी ग्राहकोंको विशेषाङ्क-प्रेषणमें लगभग एक माहका समय लग जाता है।

२-वार्षिक सदस्यता-शुल्क प्रेषित करनेपर भी किसी कारणवश यदि विशेषाङ्क वी०पी०पी० द्वारा आपके पास पहुँच गया हो तो उसे डाकघरसे प्राप्त कर लेना चाहिये एवं प्रेषित की गयी राशिका पूरा विवरण (मनीऑर्डर

पावतीसहित) यहाँ भेज देना चाहिये जिससे जाँचकर आपके सुविधानुसार राशिकी उचित व्यवस्था की जा

सके। सम्भव हो तो उक्त वी०पी०पी० से किसी अन्य सज्जनको ग्राहक बनाकर उसकी सूचना यहाँ नये सदस्यके पूरे पतेसहित देनी चाहिये। ऐसा करके आप 'कल्याण' को आर्थिक हानिसे बचानेके साथ-साथ 'कल्याण' के

पावन प्रचारमें सहयोगी भी हो सकेंगे। ३-इस अङ्क्रके लिफाफे (कवर)-पर आपकी सदस्य-संख्या एवं पता छपा है, उसे कृपया जाँच लें तथा

अपनी सदस्य-संख्या सावधानीसे नोट कर लें। रजिस्ट्री अथवा वी०पी०पी० का नम्बर भी नोट कर लेना चाहिये। पत्र-व्यवहारमें सदस्य-संख्याका उल्लेख नितान्त आवश्यक है; क्योंकि इसके बिना आपके पत्रपर हम समयसे

कार्यवाही नहीं कर पाते हैं। डाकद्वारा अङ्कोंके सुरक्षित वितरणमें सही पता एवं पिन-कोड आवश्यक है। अतः

अपने लिफाफेपर छपा अपना पता जाँच लेना चाहिये। ४-'कल्याण'एवं 'गीताप्रेस-पुस्तक-विभाग'की व्यवस्था अलग-अलग है। अतः पत्र तथा मनीऑर्डर आदि सम्बन्धित विभागको अलग-अलग भेजना चाहिये।

		4 26 2	311111	ं के जालका ।	त्त्राचे	<u>ਜਿਹੀ</u>	NIZ	-
		प्रार	पाण	' के उपलब्ध	पुराग	।परा	। पाञ्च	
र्ष	विशेषाङ्क	मृल्य(रु०)	वर्ष	विशेषाङ्क	मृल्य	(०इ)	वर्ष	 विशेषाङ्क

१२०

१५०

४९

49

वर्ष

26

(मोटा टाइप)

9	शक्ति-अङ्क	१२०	३५	सं० योगवासिष्ठ	१००	६६	सं० भविष्यपुराण	११०
१०	योगाङ्क	१००	३६	सं० शिवपुराण (बड़ा टाइप)	१३०	६७	शिवोपासनाङ्क	८५
१९	सं० पद्मपुराण	१५०	३७	सं० ब्रह्मवैवर्तपुराण	१३०	६९	गो-सेवा-अङ्क	૭૫
२१	सं० मार्कण्डेयपुराण	εo	४४-४५	गर्गसंहिता [भगवान्		90	धर्मशास्त्राङ्क	९०
२१	सं० ब्रह्मपुराण	८०		श्रीराधाकृष्णकी दिव्य		७१	कूर्मपुराण	८०

मुल्य(रु०)

१००

१००

(११ मासिक अङ्क उपहारस्वरूप)

٠.		,					, , ab	•
२१	सं० ब्रह्मपुराण	८०		श्रीराधाकृष्णको दिव्य		७१	कूर्मपुराण	८०
२३	उपनिषद्-अङ्क	१२५		लीलाओंका वर्णन]	१००	७२	भगवल्लीला-अङ्क	६५
२४	हिन्दू-संस्कृति-अङ्क	१५०	४४-४५	अग्निपुराण (मूल संस्कृतका		७३	वेदकथाङ्क	८०
२५	सं० स्कन्दपुराण	२००		हिन्दी अनुवाद)	१३०	७४	सं० गरुडपुराण	१००

२५ सं० स्कन्दपुराण ७४ सं० गरुडपुराण हिन्दी अनुवाद) २००∥ १३० ७५ आरोग्य-अङ्क (संवर्धित सं०) भक्त-चरिताङ्क नरसिंहपुराण-सानुवाद १३० १४० ४५ €0 _ श्रीगणेश-अङ्क ७७ भगवत्प्रेम-अङ्क बालक-अङ्क ११० ४८ सं० नारदपुराण श्रीहनुमान-अङ्क

संतवाणी-अङ्क सं० श्रीवराहपुराण ७९ देवीपुराण[महाभागवत] 28 ११० ५१ तीर्थाङ्क सूर्याङ्क शक्तिपीठाङ्क 38 १२० ५३ 90 ८० वामनपुराण सं० देवीभागवत ८१ अवतार-कथाङ्क ५६ ८५ ९०

९०

१६५

८२ श्रीमदेवीभागवताङ्क (पूर्वार्द्ध) श्रीमत्स्यमहापुराण सभी अङ्कोंपर डाक-व्यय अतिरिक्त देय होगा। गीताप्रेस-पुस्तक-बिक्री-विभागसे प्राप्य हैं। Hinduism Discord Server https://dsc.gg/nharma_l_MADE WITH LAVE BY Avinash/Sha

'श्रीमहेवीभागवताङ'[उत्तरार्ध]-की विषय-सची

		en L		
		मङ्गल	ाचरण	
विषय		पृष्ठ-संख्या	विषय	
उपासना	ामें देवी भुवनेश्वरीकी वतमाहात्म्य	१७	३- श्रीमद्देवीभागवतसुभाषितर् ४- श्रीमद्देवीभागवतमहापुर सिंहावलोकन (राधेश्य वतमहापुराण	ाण (उत्तरार्ध)—
अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय र्व	विषय
	सप्तम स्कन्ध		- १३- राजर्षि विश्वामित्रका	
१- पितामह ब्रह्म	प्राकी मानसी सृष्टिका वण	र्गन, नारदजीका	सत्यव्रतद्वारा किये गये	
दक्षके पत्रोंक	ो सन्तानोत्पत्तिसे विरत कर	ाना और दक्षका	१४- विश्वामित्रका सत्यव्रत (र्1	त्रेशंकु)-को सशरीर स्वर्ग

83

४५

४८

48

48

40

६०

६२

६५

६८

98

७३

उन्हें शाप देना, दक्षकन्याओंसे देवताओं और दानवोंकी उत्पत्ति

२- सर्यवंशके वर्णनके प्रसंगमें सुकन्याकी कथा ३- सुकन्याका च्यवनमुनिके साथ विवाह ४- सुकन्याकी पतिसेवा तथा वनमें अश्वनीकुमारोंसे भेंटका

वर्णन ५- अश्विनीकुमारोंका च्यवनमुनिको नेत्र तथा नवयौवनसे सम्पन्न बनाना

६- राजा शर्यातिके यज्ञमें च्यवनमुनिका अश्विनीकुमारोंको सोमरस देना ७- क्रुद्ध इन्द्रका विरोध करना; परंतु च्यवनके प्रभावको

देखकर शान्त हो जाना, शर्यातिके बादके सूर्यवंशी राजाओंका विवरण ८- राजा रेवतकी कथा.....

युवनाश्व और मान्धाताकी कथा १०- सूर्यवंशी राजा अरुणद्वारा राजकुमार सत्यव्रतका त्याग, सत्य-व्रतका वनमें भगवती जगदम्बाके मन्त्र-जपमें रत होना... ११- भगवती जगदम्बाकी कृपासे सत्यव्रतका राज्याभिषेक और राजा अरुणद्वारा उन्हें नीतिशास्त्रकी शिक्षा देना......

१२- राजा सत्यव्रतको महर्षि वसिष्ठका शाप तथा युवराज

हरिश्चन्द्रका राजा बनना.....

९- सूर्यवंशी राजाओंके वर्णनके क्रममें राजा ककुत्स्थ,

पृष्ठ-संख्या

ना और र्ग भेजना.

पृष्ठ-संख्या

वरुणदेवकी आराधनासे राजा हरिश्चन्द्रको पुत्रकी प्राप्ति १५- प्रतिज्ञा पूर्ण न करनेसे वरुणका कुद्ध होना और राजा हरिश्चन्द्रको जलोदरग्रस्त होनेका शाप देना......

१६- राजा हरिश्चन्द्रका शुन:शेपको स्तम्भमें बाँधकर यज्ञ प्रारम्भ करना १७- विश्वामित्रका शुन:शेपको वरुणमन्त्र देना और उसके जपसे वरुणका प्रकट होकर उसे बन्धनमुक्त तथा

राजाको रोगमुक्त करना, राजा हरिश्चन्द्रकी प्रशंसासे विश्वामित्रका वसिष्ठपर क्रोधित होना १८- विश्वामित्रका मायाशुकरके द्वारा हरिश्चन्द्रके उद्यानको

नष्ट कराना

राज्यदान करना..... २०- हरिश्चन्द्रका दक्षिणा देनेहेतु स्वयं, रानी और पुत्रको बेचनेके लिये काशी जाना..... २१- विश्वामित्रका राजा हरिश्चन्द्रसे दक्षिणा माँगना और

१९- विश्वामित्रकी कपटपूर्ण बातोंमें आकर राजा हरिश्चन्द्रका

रानीका अपनेको विक्रयहेतु प्रस्तुत करना..... २२- राजा हरिश्चन्द्रका रानी और राजकुमारका विक्रय करना और विश्वामित्रको ग्यारह करोड स्वर्णमुद्राएँ देना तथा

विश्वामित्रका और अधिक धनके लिये आग्रह करना..... २३- विश्वामित्रका राजा हरिश्चन्द्रको चाण्डालके हाथ बेचकर ऋणमुक्त करना.....

१०३

अध्याय	 विषय	पृष्ठ-सं	التحتا	अध्याय	 विषय	पृष्ठ-संख्य
	राजा हरिश्चन्द्रको श्मशानघात				ननके विविध प्रकारोंका वर्णन	
			१०५	४०- देवाको	पूजा-विधि तथा फलश्रुति	१४
	रोहितको मृत्यु, रानीका करुण				अष्टम स्कन्ध	
	रानीको राक्षसी समझकर ^न र चाण्डालका हरिश्चन्द्रको उस				सृष्टिके लिये ब्रह्माजीकी प्रे	=
			१०७		आराधना करना तथा देवीका	
	ण्डालवेशधारी राजा हरिश्चन्द्रर		,,,		 की नासिकासे वराहके रूपमें भग	
	ज्ञात स्तास समा स्वास्त्र हिस्सा है । ज्ञान स्वाम और करुण विल्				का नासिकास वराहक रूपम मग ोना और पृथ्वीका उद्धार करन	
_	नी और पुत्रको पहचानकर मूर्ा				स्तुति करना	
	म करना		१११		 मनुकी वंश-परम्पराका वर्णन	
२७- चिता बनाव	_{कर} राजाका रोहितको उसपर लि	नटाना और			प्रियव्रतका आख्यान तथा समुद्र	
	न भगवतीका ध्यानकर स्वयं	•			ज प्रसंग	
	। जानेको उद्यत होना, ब्रह्माजीर्सा				ापर स्थित विभिन्न द्वीपों और व	
	राजाके पास आना, इन्द्रका			परिचयः		१५ —
	तको जीवित करना और राजा-र ये आग्रह करना, राजाका सम्पूर्ण				ाके विभिन्न पर्वतोंसे निकलने र नर्णार	
	य आग्रह करना, राजाका सम्पूरा प्ताथ स्वर्ग जानेका निश्चय		११४		ा वर्णन तिका वर्णन तथा गंगावतरणका	
	की तपस्या; वर-प्राप्ति तथा		,,,	_	प्रवर्म भगवान् शंकरद्वारा भग	
	भगवतीकी प्रार्थना करना, भगवती			-	रूपकी आराधना तथा भद्राश्ववर्ष	`
	म्भरीरूपमें प्राकट्य, दुर्गमका			हयग्रीवर	ूपकी उपासना	१६
	भगवतीकी स्तुति		११६		प्रह्लादके द्वारा नृसिंहरूपकी आराध	•
* *	राजा जनमेजयसे भगवतीकी				लक्ष्मीजीके द्वारा कामदेवरूपकी त	
	। और उनसे उन्हींकी आराधन			-	ं द्वारा मत्स्यरूपको स्तुति-उपार — ' रे' — — ——	
	गवान् शंकर और विष्णुके उ ी तथा लक्ष्मीका अन्तर्धान होना				वर्षमें अर्यमाके द्वारा कच्छपरूप वर्षमें पृथ्वीद्वारा वाराहरूपकी ए	
	त तथा लक्ष्माका अन्तवान हाना का शक्तिहीन होना		१२०	•	विषम पृथ्वाद्वारा वाराहरूपका । ग्रीहनुमान्जीके द्वारा श्रीरामचन्द्रर	•
	ने उत्पत्तिको कथा तथा उनके		110			=
*	ात्म्य	•	१२२		स्थित भारतवर्षमें श्रीनारदजीके	
३१- तारकासुरसे	पीड़ित देवताओंद्वारा भगवतीकी	स्तुति तथा			स्तुति-उपासना तथा भारतवर्ष	
	हिमालयकी पुत्रीके रूपमें प्रक					
	देना		१२६		गाल्मलि और कुशद्वीपका वर्णन	
	प्रसंगमें भगवतीका हिमालयसे				गाक और पुष्करद्वीपका वर्णन . ————————	
	.पका वर्णन अपनी सर्वव्यापकता बताते हुए		१३०		कपर्वतका वर्णन	
	अपना सवव्यापकता बतात हुए गा, भयभीत देवताओंकी स्तुति				गतिका वर्णन तथा ग्रहोंकी गतिका वर्णन	
	ा, मयमात दयताञाका स्तुत पुन: सौम्यरूप धारण करना		१३२		तया ग्रहाका गातका पणन चक्र तथा ध्रुवमण्डलका वर्णन	
	हिमालय तथा देवताओंसे परमपदव		, , ,		लका वर्णन	
	ना		१३५		वितल तथा सुतललोकका वर्ण	
३५- भगवतीद्वारा	यम, नियम, आसन, प्राणायाम,	, प्रत्याहार,			, महातल, रसातल और पाताल	
	कुण्डलीजागरणकी विधि बता		१३७		ा वर्णन	
	द्वारा हिमालयको ज्ञानोपदेश—ब्रह				ारदद्वारा भगवान् अनन्तकी महिम	
			१४०		ा नामावली ———————————————————————————————	•
	अपनी श्रेष्ठ भक्तिका वर्णन		१४२		नरकोंका वर्णन	
	द्वारा देवीतीर्थों, व्रतों तथा		0.00		दान करनेवाले विभिन्न पापोंका	•
વળનં		• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	१४४ ।	२४– दवाका	उपासनाके विविध प्रसंगोंका वर	<u>र्गन १८</u>

अध्य	ग्रय विषय पृष्ठ-र	पंख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्य	π
	नवम स्कन्ध		२२– कुमार कार्नि		———— से शंखचूड़का	
ξ	प्रकृतितत्त्वविमर्श; प्रकृतिके अंश, कला एवं कलांशसे		,	द्भ और आकाशवाणीका	•	
-	उत्पन्न देवियोंका वर्णन	१९३	शंखचूड़की	अवध्यताका कारण बताना.	२६	ξ
?	परब्रह्म श्रीकृष्ण और श्रीराधासे प्रकट चिन्मय देवताओं		`	कर और शंखचूड़का युद्ध, भग	`	
-	एवं देवियोंका वर्णन	१९९	-	ाके वेशमें शंखचूड़से कवच म		
	परिपूर्णतम श्रीकृष्ण और चिन्मयी राधासे प्रकट विराट्रूप		٠.,٠	रूप धारणकर तुलसीसे हास-		
-	बालकका वर्णन	२०३		भस्म होना और सुदामा		
8	सरस्वतीकी पूजाका विधान तथा कवच	२०६		डुँचना इ		,8
	याज्ञवल्क्यद्वारा भगवती सरस्वतीकी स्तुति	२१०	२४- शंखचूड़रूप	ग्धारी श्रीहरिका तुलसीके ^१	भवनमें जाना,	
€- 7	लक्ष्मी, सरस्वती तथा गंगाका परस्पर शापवश भारतवर्षमें		तुलसीका १	श्रीहरिको पाषाण होनेका शाप	देना, तुलसी-	
-	पधारना	२१२	महिमा, श	ालग्रामके विभिन्न लक्षण एव	त्रं माहात्म्यका	
	भगवान् नारायणका गंगा, लक्ष्मी और सरस्वतीसे उनके		वर्णन		२७	१
-	शापकी अवधि बताना तथा अपने भक्तोंके महत्त्वका		२५- तुलसी-पूज	ान, ध्यान, नामाष्टक तथा तु	लसीस्तवनका	
	वर्णन करना	२१५				ξ
	कलियुगका वर्णन, परब्रह्म परमात्मा एवं शक्तिस्वरूपा			की पूजा-स्तुतिका विधान		1
	मूलप्रकृतिकी कृपासे त्रिदेवों तथा देवियोंके प्रभावका			वित्रीकी उपासनासे राजा अश्वप		
	वर्णन और गोलोकमें राधा-कृष्णका दर्शन	२१८		याकी प्राप्ति, सत्यवान्के सा		
	पृथ्वीकी उत्पत्तिका प्रसंग, ध्यान और पूजनका प्रकार			त्यवान्की मृत्यु, सावित्री अँ		
	तथा उनकी स्तुति	२२३	संवाद		२८	?
	पृथ्वीके प्रति शास्त्र-विपरीत व्यवहार करनेपर नरकोंकी			मराज-संवाद		3
	प्राप्तिका वर्णन	२२६	२९- सावित्री-ध	र्मराजके प्रश्नोत्तर और धर्मराजट्ट	प्ररा सावित्रीको	
	गंगाकी उत्पत्ति एवं उनका माहात्म्य	२२७			२८	8
	गंगाके ध्यान एवं स्तवनका वर्णन, गोलोकमें श्रीराधा-			ोंकी प्राप्ति करानेवाले पुण्यव		છ.
	कृष्णके अंशसे गंगाके प्रादुर्भावकी कथा	२३२		यमाष्टकद्वारा धर्मराजका स्त		₹.
	श्रीराधाजीके रोषसे भयभीत गंगाका श्रीकृष्णके			सावित्रीको अशुभ कर्मोंके प		8
	चरणकमलोंकी शरण लेना, श्रीकृष्णके प्रति राधाका			रककुण्डोंमें जानेवाले पापिये		
	उपालम्भ, ब्रह्माजीकी स्तुतिसे राधाका प्रसन्न होना			र्णन		, 4
	तथा गंगाका प्रकट होना	२३६		ापकर्म तथा उनके कारण प्र		
	गंगाके विष्णुपत्नी होनेका प्रसंग	२४२		प्रर्णन		१
	तुलसीके कथा-प्रसंगमें राजा वृषध्वजका चरित्र-		1	पकर्मोंसे प्राप्त होनेवाली विभि		
	वर्णन	२४३				Ч
	वेदवतीकी कथा, इसी प्रसंगमें भगवान् श्रीरामके चरित्रके			। सावित्रीसे देवोपासनासे प्र >		
	एक अंशका कथन, भगवती सीता तथा द्रौपदीके		_	जे कहना		2
	पूर्वजन्मका वृत्तान्त	२४५		किकुण्ड तथा वहाँ दी जानेव		
	भगवती तुलसीके प्रादुर्भावका प्रसंग	२४८				9
	तुलसीको स्वप्नमें शंखचूड़का दर्शन, ब्रह्माजीका शंखचूड़			सावित्रीसे भगवतीकी महिमाक		
	तथा तुलसीको विवाहके लिये आदेश देना	२५१		पतिको जीवनदान देना		٠, ۲
	तुलसीके साथ शंखचूड़का गान्धर्वविवाह, शंखचूड़से			क्ष्मीका प्राकट्य, समस्त देवता		
	पराजित और निर्वासित देवताओंका ब्रह्मा तथा शंकरजीके					
	साथ वैकुण्ठधाम जाना, श्रीहरिका शंखचूड़के पूर्वजन्मका		_	शापसे इन्द्रका श्रीहीन हो जान 		१
	वृत्तान्त बताना	२५५		इन्द्र तथा देवताओंको साथ लेकर		
	पुष्पदन्तका शंखचूड़के पास जाकर भगवान् शंकरका			रिका उनसे लक्ष्मीके रुष्ट होने		
	सन्देश सुनाना, युद्धकी बात सुनकर तुलसीका सन्तप्त	5. -		द्रमन्थन तथा उससे लक्ष्मीजीका		Ч
	होना और शंखचूड़का उसे ज्ञानोपदेश देना	२५९		ागवती लक्ष्मीका षोडशोपचा		
58 -	शंखचूड़ और भगवान् शंकरका विशद वार्तालाप	२६३	। स्तवन		३२	6

		ا ع	8]		
अध	याय विषय पृष	ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
×3-	भगवती स्वाहाका उपाख्यान	३३१	४– रुद्राक्षकी उ	त्पत्ति तथा उसके विभिन्न स्वरूपोंक	ा वर्णन ३९३
88-	भगवती स्वधाका उपाख्यान	३३४		ज स्वरूप तथा रुद्राक्ष-धारणका	
४५-	भगवती दक्षिणाका उपाख्यान	३३६		की महिमाके सन्दर्भमें गुणनिधिका	
४६-	भगवती षष्ठीकी महिमाके प्रसंगमें राजा प्रियव्रतकी कथा	38o		कारके रुद्राक्ष और उनके अधिर	
-evs	भगवती मंगलचण्डी तथा भगवती मनसाका आख्यान	३४३	८- भूतशुद्धि		४०१
8 6-	भगवती मनसाका पूजन-विधान, मनसा-पुत्र आस्तीक	का		ण (शिरोव्रत)	
	जनमेजयके सर्पसत्रमें नागोंकी रक्षा करना, इन्द्रह			णको विधि	
	मनसादेवीका स्तवन करना			कार	
	आदि गौ सुरभिदेवीका आख्यान			ग्रारण करनेपर दोष	
	भगवती श्रीराधा तथा श्रीदुर्गाके मन्त्र, ध्यान, पूज		१३- भस्म तथा	ं त्रिपुण्ड्र–धारणका माहात्म्य	४१०
	विधान तथा स्तवनका वर्णन			का महत्त्व	
	दशम स्कन्ध		१५- भस्म-माहा	ात्म्यके सम्बन्धमें दुर्वासामुनि और वृ	हम्भीपाकस्थ
0	स्वायम्भुव मनुकी उत्पत्ति, उनके द्वारा भगवती	r acl	जीवोंका उ	आख्यान, ऊर्ध्वपुण्डुका माहात्म्य	४१५
ζ_	आराधना		१६- सन्ध्योपास	ना तथा उसका माहात्म्य	४२०
ລ	देवीद्वारा मनुको वरदान, नारदजीका विन्ध्यपर्वः			हेमा	
4-	सुमेरुपर्वतकी श्रेष्ठता कहना			। पूजा-विधिका वर्णन, अन्	
a _	बुन्स्यपर्वतका अखाशतक बढ़कर सूर्यके मार्ग		माहात्म्यमें	राजा बृहद्रथका आख्यान	४२८
٧-	अवरुद्ध कर लेना			न्ध्या तथा गायत्रीजपका फल	
~	देवताओंका भगवान् शंकरसे विन्ध्यपर्वतको वृद्धि रोकने		२०- तर्पण तथा	सायंसन्ध्याका वर्णन	४३२
8-	प्रार्थना करना और शिवजीका उन्हें भगवान् विष्णु		२१- गायत्रीपुरश	चरण और उसका फल	४३४
				रव और प्राणाग्निहोत्रकी विधि	
,	पास भेजना	३६३		1यण, प्राजापत्य आदि व्रतोंका व	
4-	देवताओंका वैकुण्ठलोकमें जाकर भगवान् विष्णु			मद्धि और उपद्रव-शान्तिके लिरं	
_	स्तुति करना			ग्रेग	
<i>द</i> -	भगवान् विष्णुका देवताओंको काशीमें अगस्त्यर्ज			द्वादश स्कन्ध	,
1.0	पास भेजना, देवताओंकी अगस्त्यजीसे प्रार्थना				0 %
	अगस्त्यजीकी कृपासे सूर्यका मार्ग खुलना			का माहात्म्य तथा गायत्रीके चौब	
2-	स्वारोचिष, उत्तम, तामस और रैवत नामक मनुओं			द आदिका वर्णन	880
	वर्णन	३६९ 		वौबीस वर्णोंकी शक्तियों, रंगों एव	। मुद्राओका
ζ-	चाक्षुष मनुकी कथा, उनके द्वारा देवीकी आराधना		वर्णन		888
	वर्णन	३७० —		_ग ध्यान और गायत्रीकवचका व	
१०-	वैवस्वत मनुका भगवतीकी कृपासे मन्वन्तराधिप हो			ग तथा उसका अंगन्यास	
	सावर्णि मनुके पूर्वजन्मकी कथा		· ·	त्र तथा उसके पाठका फल	
११-	सावर्णि मनुके पूर्वजन्मकी कथाके प्रसंगमें मधु-कैटभ			स्रनामस्तोत्र तथा उसके पाठका	
	उत्पत्ति और भगवान् विष्णुद्वारा उनके वधका वर्णन		७- दीक्षाविधि		
85-	समस्त देवताओंके तेजसे भगवती महिषमर्दिनीका प्राक			विजयगर्व तथा भगवती उमाद्वारा	
	और उनके द्वारा महिषासुरका वध, शुम्भ-निशुम्भ			माका इन्द्रको दर्शन देकर ज्ञानोपदेश	
	अत्याचार और देवीद्वारा चण्ड-मुण्डसहित शुम्			यित्रीकी कृपासे गौतमके द्वारा अने	
	निशुम्भका वध			रिक्षा, ब्राह्मणोंकी कृतघ्नता औ	
१३-	मनुपुत्रोंकी तपस्या, भगवतीका उन्हें मन्वन्तराधिपति होने			णोंको घोर शाप-प्रदान	·
	वरदान देना, दैत्यराज अरुणको तपस्या और ब्रह्माजी			ा वर्णन्	
	वरदान, देवताओंद्वारा भगवतीकी स्तुति और भगवती			रत्नमय नौ प्राकारोंका वर्णन	
	भ्रामरीके रूपमें अवतार लेकर अरुणका वध करना	۰۵۶ ۲	१२- भगवती ज	ागदम्बाके मण्डपका वर्णन तथा	मणिद्वीपकी
	एकादश स्कन्ध				
₹-	भगवान् नारायणका नारदजीसे देवीको प्रसन्न करनेव		१३- राजा जनग	मेजयद्वारा अम्बायज्ञ और श्रीमद्दे	वीभागवत-
	सदाचारका वर्णन		महापुराणव	का माहात्म्य	४९२
₹-	शौचाचारका वर्णन	३८ ९	_	ागवतमहापुराणकी महिमा	
३⊨।	iत्रवर्गाङ्गल [©] Distoransenver https://d	പ്ലൂപ്പ			
''	madiom biocora octivoi mups.//d	55.gg/di	•••• IVI/	CE WITH LOVE DI	, wii idoi i/ Oi id

^[१५] चित्र-सूची

्र (रंगीन-चित्र)

	विषय	पृष्ठ-संख्या	विषय पृष्ठ-सं	ख्या
	सिच्चदानन्दमयी देवी मूलप्रकृतिके दक्षिण अंगसे राधाका और वाम		५– भगवती शाकम्भरीदेवीद्वारा शाककी वर्षा ६– भगवती गायत्रीके प्रातः, मध्याह्न तथा सायं—तीनों	४
	लक्ष्मीका प्राकट्य	ع	सन्ध्या-कालोंका ध्यान-स्वरूप	4
₹-	मकरवाहिनी भगवती श्रीगंगा		७- श्रीकृष्णसे पंचमुख महादेवका प्राकट्य	ξ
8-	इन्द्र आदि देवताओं तथा महर्षि विश्वामि	त्रद्वारा	८- भगवती भ्रामरीदेवी	૭
	हरिश्चन्द्रको आशीर्वाद	ξ	९- मणिद्वीपाधिष्ठात्री भगवती श्रीभुवनेश्वरी	۷
			>	
		(रेखा-	-चित्र)	
१-	दक्षद्वारा नारदजीको शाप देना	88	२३- हरिश्चन्द्रसहित शैव्याको देवताओंका दर्शन	११४
7 -	सुकन्याद्वारा महर्षि च्यवनके नेत्रोंका भेदा जाना	<i>8</i> 9	२४- देवताओंद्वारा अमृतमयी वृष्टि तथा रोहितका जीवित	
₹-	सुकन्याद्वारा महर्षि च्यवनको शुश्रूषा	५१	होना	११५
8-	अश्विनीकुमारों तथा महर्षि च्यवनका एक-जैस	ा रूप	२५- भगवतीका देवताओंको फल-मूल प्रदान करना	११८
	देखकर सुकन्याका भगवतीसे प्रार्थना करना	५५	२६- देवीद्वारा दुर्गमका वध	११९
4 -	राजा शर्याति एवं महर्षि च्यवनका संवाद	५९	२७- भगवान् विष्णुद्वारा देवताओंको प्रबोधन	१२७
€-	महर्षि च्यवनके आह्वानपर यज्ञाग्निसे कृत्याका	उत्पन्न	२८- देवताओंको भगवतीका दर्शन	१२८
	होना	६०	२९- हिमालय और देवताओंको देवीका दर्शन	१२९
9 –	महर्षि च्यवनद्वारा देवराज इन्द्र एवं अश्विनीकुम	गरोंक <u>ो</u>	३०- मनुसहित ब्रह्माजीद्वारा भगवान् वराहकी स्तुति	१५३
	सोमरसका पान कराना	६२	३१- भगवान् शिवद्वारा भगवान् संकर्षणका आराधन	१६१
۷-	राजा यौवनाश्वद्वारा अभिमन्त्रित जलका पान व	रना ६७	३२- भद्रश्रवाद्वारा हयमूर्ति भगवान् वासुदेवकी स्तुति	१६२
۶-	यौवनाश्वकी दायीं कुक्षिसे मान्धाताका उत्पन्न	होना ६७	३३- भक्तराज प्रह्लादद्वारा भगवान् नृसिंहकी स्तुति	१६३
१०-	देवराज इन्द्रका मान्धाताको अपनी तर्ज	नीद्वारा	३४- लक्ष्मीजीद्वारा कामदेवरूपधारी भगवान् विष्णुका स्तवन	१६३
	दुग्धपान कराना	६८	३५- मनुद्वारा मत्स्यरूपधारी भगवान्को स्तुति	१६४
११-	अग्निप्रवेशके लिये उद्यत सत्यव्रतको जगदम्बाका द		३६- अर्यमाद्वारा कच्छपरूपधारी भगवान्की स्तुति	१६५
१२-	देवराजद्वारा त्रिशंकुको विमानपर बैठाना	ده	३७- पृथ्वीदेवीद्वारा आदिवराहरूप भगवान्की उपासना	१६५
१३-	मन्त्रीका शुन:शेपको राजा हरिश्चन्द्रके पास ले जा	ना ८६	३८- हनुमान्जीद्वारा भगवान् श्रीरामकी स्तुति	१६६
१४-	राजा हरिश्चन्द्रके सन्ध्या-वन्दनके समय	मुनि	३९- नारदजीद्वारा भगवान् आदिपुरुषका स्तवन	१६७

८०- राजा हाररपन्त्रक सन्ना-पन्दनक समय मुान		२७- गारदेशाश्वारा मगवान् जादिपुरवका स्तावन	300
विश्वामित्रका आना	९५	४०- नारकीय यातना	१८५
१५- राजा और रानीकी मूर्च्छा	९८	४१- नारकीय यातना	१८७
१६- शैव्याद्वारा हरिश्चन्द्रसे अपनेको बेचकर दक्षिणा चुकाने-		४२- देवीके जिह्वाग्रसे गौरवर्णा कन्याका प्रकट होना	२०१
हेतु कहना	१००	४३- भगवान् श्रीकृष्णके रोमकूपोंसे असंख्य गोपोंका प्रकट	
१७- ब्राह्मणका बाल पकड़कर शैव्याको खींचना	१०१	होना	२०१
१८- ब्राह्मणका शैव्या एवं रोहितको खरीदकर अपने घरको		४४- राधाजीके रोमकूपोंसे अनेक गोपकन्याओंका प्रकट	
प्रस्थान	१०१	होना	२०३
१९- हरिश्चन्द्रद्वारा स्वयंको चाण्डालके हाथ बेचकर मुनि		४५- श्रीकृष्णके शरीरसे आविर्भूत देवी दुर्गाका उनकी स्तुति	

१०५

१०६

१०९

११२

करना तथा श्रीकृष्णका उन्हें रत्नमय सिंहासन प्रदान

करना

कमलोंमें अविचल भक्तिका वर माँगना.....

४६- विराट्रूप बालकका भगवान् श्रीकृष्णसे उनके चरण-

२०२

२०४

विश्वामित्रको दक्षिणा देना.....

२०- श्मशानमें राजा हरिश्चन्द्र

२१- रानी शैव्याको मारनेहेतु चाण्डालको सौंपा जाना

२२- राजा हरिश्चन्द्रका पुत्रको मृत देखकर मूर्च्छित होना.....

	विषय पृष्ठ-र	पंख्या	ि विषय पृष्ठ∹	संख्या
80-	भगवती सरस्वती	२०८	७४-यज्ञपुरुषद्वारा भगवती दक्षिणाकी स्तुति	३३९
٧ ٧-	ब्रह्माजीद्वारा भृगुको विश्वजय नामक सरस्वती-कवच		७५-भगवती षष्ठीद्वारा बालकको जीवितकर प्रियव्रतको	
	बतलाना	२०८	प्रदान करना	३४१
४९-	याज्ञवल्क्यद्वारा भगवती सरस्वतीको प्रणाम करना	२१०	७६-भगवान् श्रीकृष्ण, ब्रह्माजी, शिवजी एवं कश्यपऋषिका	
40-	लक्ष्मी, सरस्वती और गंगाके परस्पर शापका कारण सुनकर		ऋषि जरत्कारुके आश्रममें आना	३४८
	भगवान् श्रीहरिका उनसे समयानुकूल बातें कहना	२१४	७७-श्रीकृष्णद्वारा अपने वामभागसे लीलापूर्वक बछड़ेसहित	
५१-	राधाका श्रीकृष्णको पतिरूपमें प्राप्त करनेके लिये तप		दुग्धवती सुरभि गौको प्रकट करना	३५२
	करना और श्रीकृष्णका प्रकट होना	२२२	७८-दुर्गायन्त्र	३५७
५ २-	पृथ्वीदेवी	२२५	७९-मनुद्वारा देवीसे वरयाचना	३६०
	ब्रह्मा, शिव एवं मुनियोंद्वारा श्रीकृष्णका स्तवन	२२८	८०-विन्ध्याचल तथा देवर्षि नारदका वार्तालाप	३६१
48 -	गंगा-भगीरथके सामने गोपवेषधारी श्रीकृष्णका प्राकट्य	२२९	८१-विन्ध्यद्वारा भगवान् सूर्यका मार्ग अवरुद्ध करना	३६२
44-	श्रीकृष्णजीका गंगाजीको पतिरूपमें प्राप्त होनेका		८२-देवताओंद्वारा महादेवजीका स्तवन	३६३
	आश्वासन देना	२३०	८३-भगवान् विष्णुका देवताओंको आश्वासन देना	३६५
५६-	माँ गंगा	२३२	८४-विन्ध्यद्वारा महर्षि अगस्त्यको साष्टांग प्रणाम करना	३६८
	गोलोकमें भगवान् शंकरका श्रीकृष्ण और राधाको		८५-चाक्षुष मनुको भगवतीका दर्शन	३७१
	संगीत सुनाना	२३४	८६-राजा सुरथका सुमेधामुनिके आश्रमपर पहुँचना	३७२
4 ८-	गोपोंद्वारा भगवती राधिकाको प्रणाम करना	२३७	८७-सुरथद्वारा महर्षि सुमेधासे प्रश्न	३७२
५९-	ब्रह्मा, शिव एवं श्रीकृष्णद्वारा भगवती श्रीराधिकाकी		८८-मधु-कैटभका ब्रह्माजीके वधको उद्यत होना	३७३
	स्तुति	२४०	८९-भगवान् विष्णुद्वारा मधु-कैटभका वध	४७६
ξ 0-	शिव तथा अन्य देवताओंका भगवान् विष्णुको प्रणाम		९०-देवताओंद्वारा भगवान् विष्णु एवं शिवजीको महिषासुरके	
	करना	२४४	अत्याचार बताना	३७५
६१-	तुलसीका भगवान् नारायणको पतिरूपमें प्राप्त करने-		९१–भगवतीद्वारा महिषासुरका वध	३७६
	हेतु तप करना	२४९	९२-देवताओंद्वारा भगवतीका स्तवन	ઇઇફ
६२-	ब्रह्माजीद्वारा शंखचूड़ एवं तुलसीको विवाहके लिये		९३-शुम्भासुरके दूत सुग्रीव एवं देवीका संवाद	ડેઇફ
	प्रेरित करना	२५४	९४- शुम्भका धूम्राक्षको देवीको पकड़कर लानेका आदेश देना	ડેઇફ
ξ 3-	शंखचूड़के वधके लिये भगवान् विष्णुद्वारा शिवको		९५-भगवतीद्वारा हुंकारमात्रसे धूम्राक्षको भस्म करना	३७९
	त्रिशूल प्रदान करना	२५९	९६-सुरथद्वारा देवीकी पार्थिव मूर्तिका पूजन	३७९
६४-	भगवान् शंकर, कार्तिकेय तथा भद्रकालीद्वारा शंखचूड़को		९७-मनुपुत्रोंद्वारा देवीकी स्तुति	३८०
	आशीर्वाद देना	२६४	९८- अरुण नामक दैत्यको ब्रह्माजी एवं गायत्रीका दर्शन	३८२
६५-	्तुलसीको भगवान् नारायणका दर्शन	२७२	९९-देवीद्वारा अपने हाथसे भ्रमरोंको उत्पन्न करना	३८५
६६-	् सावित्रीद्वारा यमराजका अनुगमन	२८२	१००-देवर्षिद्वारा भगवान् नारायणसे प्रश्न	३८६
	यमराजद्वारा सावित्रीको उपदेश	२८७	१०१-षट्चक्रमूर्ति	3८८
	गोपियाँ एवं भगवान् श्रीकृष्ण	३१६	१०२-पूरक आदि प्राणायाम	४२२
	यमराजद्वारा सावित्रीको वरप्रदान	३१८	१०३-भगवती जगदम्बाका देवताओंके समक्ष यक्षरूपमें	
	देवराज इन्द्रका गुरु बृहस्पतिसे दुर्वासाद्वारा प्राप्त शापका		प्रकट होना	४७२
	वर्णन	३२३	१०४-अग्निद्वारा तृणको जलानेका प्रयास करना	४७३
७१-	भगवान् विष्णुद्वारा लक्ष्मीजीसे क्षीरसागरके यहाँ जन्म		१०५-वायुदेवद्वारा तृणको उड़ानेका प्रयास करना	४७३
	लेनेहेतु कहना	३२७	१०६-देवराज इन्द्रको भगवती हैमवती शिवाका दर्शन	४७४
७२	-तपस्यारत स्वाहादेवीको भगवान् श्रीकृष्णका दर्शन	332	१०७-जगज्जननी भगवतीद्वारा ऋषि गौतमको पूर्णपात्र प्रदान	
	-ब्रह्माजीद्वारा स्वाहादेवीको पितरोंके लिये प्रदान		करना	800
· `			l	

करना

३३५ १०८-ऋषि गौतमद्वारा कृतघ्न ब्राह्मणोंको शाप

১৩४

श्रीमद्देवीभागवतमाहात्म्य *

श्रीमद्देवीभागवतमाहात्म्य

श्रुत्वैतत्तु महादेव्याः पुराणं परमाद्भुतम्। कृतकृत्यो भवेन्मर्त्यो देव्याः प्रियतमो हि सः॥ मुलप्रकृतिरेवैषा

तु प्रतिपाद्यते । समं तेन पुराणं स्यात्कथमन्यन्नृपोत्तम॥

पाठे वेदसमं पुण्यं यस्य स्याज्जनमेजय। पठितव्यं प्रयत्नेन तदेव विबुधोत्तमै:॥ नित्यं यः शृण्याद्भक्त्या देवीभागवतं परम् । न तस्य दुर्लभं किञ्चित्कदाचित्क्वचिदिस्ति हि॥ अपुत्रो लभते पुत्रान्धनार्थी धनमाप्नुयात् । विद्यार्थी प्राप्नुयाद्विद्यां कीर्तिमण्डितभूतलः॥

पठेन्नित्यं

प्रयत्नेन

पठितव्यं

वन्थ्या वा काकवन्थ्या वा मृतवन्थ्या च याङ्गना । श्रवणादस्य तद्दोषान्निवर्तेत न संशयः ॥ यद्गेहे पुस्तकं चैतत्पूजितं यदि तिष्ठति । तद्गेहं न त्यजेन्नित्यं रमा चैव सरस्वती ॥

मण्डलान्नाशमाप्नोति ज्वरो दाहसमन्वितः । शतावृत्त्यास्य पठनात्क्षयरोगो विनश्यति ॥ प्रतिसन्ध्यं पठेद्यस्तु सन्ध्यां कृत्वा समाहितः। एकैकमस्य चाध्यायं स नरो ज्ञानवान्भवेत्॥

वैष्णवैश्चैव शैवैश्च रमोमा प्रीयते सदा। सौरैश्च गाणपत्यैश्च स्वेष्टशक्तेश्च तृष्टये॥

वेदसारमिदं पुण्यं पुराणं द्विजसत्तमाः। वेदपाठसमं पाठे श्रवणे च तथैव हि॥

नवरात्रचतुष्टये । वैदिकैर्निजगायत्रीप्रीतये

[महर्षि व्यासने राजा जनमेजयसे कहा—] महादेवीका यह परम अद्भुत पुराण सुनकर मनुष्य कृतकृत्य हो जाता है और वह भगवतीका प्रियतम हो जाता है। हे नृपश्रेष्ठ! जिस देवीभागवतमें साक्षात् मूलप्रकृतिका ही प्रतिपादन किया गया है, उसके समान अन्य कोई पुराण भला कैसे हो सकता है? हे जनमेजय! जिस देवीभागवतपुराणका पाठ करनेसे वेद-पाठके समान पुण्य प्राप्त होता है, उसका पाठ श्रेष्ठ विद्वानोंको प्रयत्नपूर्वक करना चाहिये। **[श्रीसृतजी मुनियोंसे** बोले—] जो इस श्रेष्ठ श्रीमद्देवीभागवतका नित्य भक्तिपूर्वक श्रवण करता है, उसके लिये कुछ भी कहीं और कभी दुर्लभ नहीं है। इसके श्रवणसे पुत्रहीन व्यक्तिको पुत्र, धन चाहनेवालेको धन और विद्याके अभिलाषीको विद्याकी प्राप्ति हो जाती है, साथ ही सम्पूर्ण पृथ्वीलोकमें वह कीर्तिमान् हो जाता है। जो स्त्री वन्ध्या, काकवन्ध्या अथवा मृतवन्ध्या हो; वह इस पुराणके श्रवणसे उस दोषसे मुक्त हो जाती है; इसमें सन्देह नहीं है। यह पुराण जिस घरमें विधिपूर्वक पूजित होकर स्थित रहता है, उस घरको लक्ष्मी तथा सरस्वती कभी नहीं छोड़तीं और वेताल, डाकिनी तथा राक्षस आदि वहाँ झाँकतेतक नहीं। यदि ज्वरग्रस्त मनुष्यको स्पर्श करके एकाग्रचित्त होकर इस पुराणका पाठ किया जाय तो दाहक ज्वर उसके मण्डलको छोड़कर भाग जाता है। इसकी एक सौ आवृत्तिके पाठसे क्षयरोग समाप्त हो जाता है। जो मनुष्य प्रत्येक सन्ध्याके अवसरपर दत्तचित्त होकर सन्ध्याविधि सम्पन्न करके इस पुराणके एक-एक अध्यायका पाठ करता है, वह ज्ञानवान् हो जाता है। शारदीय नवरात्रमें परम भक्तिसे इस पुराणका नित्य पाठ करना चाहिये। इससे जगदम्बा उस व्यक्तिपर प्रसन्न होकर उसकी अभिलाषासे भी अधिक फल प्रदान करती हैं। वैष्णव, शैव, सौर तथा गाणपत्यजनोंको अपने-अपने इष्टदेवकी शक्तिकी सन्तुष्टिके लिये चैत्र, आषाढ़, आश्विन और माघ—इन मासोंके चारों नवरात्रोंमें इस पुराणका प्रयत्नपूर्वक पाठ करना चाहिये; इससे रमा, उमा आदि शक्तियाँ उसपर सदा प्रसन्न रहती हैं। हे मुने! इसी प्रकार वैदिकोंको भी अपनी गायत्रीकी प्रसन्नताके लिये इसका नित्य पाठ करना चाहिये। हे श्रेष्ठ मुनियो! यह पुराण परम पवित्र तथा वेदोंका

तत्र वेतालडाकिनीराक्षसादयः। ज्वरितं तु नरं स्पृष्ट्वा पठेदेतत्समाहितः॥

शारदीयेऽतिभक्तितः । तस्याम्बिका तु सन्तुष्टा ददातीच्छाधिकं फलम्।।

सारस्वरूप है। इसके पढ़ने तथा सुननेसे वेदपाठके समान फल प्राप्त होता है।[श्रीमद्देवीभागवत]

********************* श्रीमद्देवीभागवतसुभाषितसुधा

सदा सेव्यं सदा सेव्यं देवीभागवतं नरै: *

नासत्यं क्वापि वक्तव्यं नामार्गे गमनं क्वचित्॥ मन्ने कहा है। (७।१९।४)

चाहिये। (७। ११। ३८-३९) पुरुषकारश्च माननीयाविमौ नृभि:। उद्यमेन विना कार्यसिद्धिः सञ्जायते कथम्॥

असत-मार्गपर ही जाना चाहिये। (७।११।३४)

धर्मे मितः सदा कार्या दानं दद्याच्य नित्यशः॥

शुष्कवादो न कर्तव्यो दुष्टसङ्गं च वर्जयेत्।

यष्टव्या विविधा यज्ञाः पूजनीया महर्षयः॥

दान देते रहना चाहिये। नीरस सम्भाषण नहीं करना चाहिये.

धर्ममें सदा बुद्धि लगाये रखनी चाहिये और प्रतिदिन

दुष्टोंकी संगतिका त्याग कर देना चाहिये, विविध यज्ञानुष्ठान करते रहना चाहिये और महर्षियोंकी सदा पूजा करनी मनुष्योंको भाग्य तथा पुरुषार्थ—इन दोनोंका आदर करना चाहिये; क्योंकि बिना उद्योग किये कार्यसिद्धि कैसे

हो सकती है? (७।१४।३६) दयासमं नास्ति पुण्यं पापं हिंसासमं नहि॥ दयाके समान कोई पुण्य नहीं है और हिंसाके समान कोई पाप नहीं है। (७।१६।३९) दयया सर्वभूतेषु सन्तुष्टो येन केन च॥ सर्वेन्द्रियोपशान्त्या च तुष्यत्याशु जगत्पतिः। जो सभी प्राणियोंके प्रति दयाभाव रखता है, जो कुछ भी प्राप्त हो जाय; उसीसे सन्तोष करता है और अपनी

श्रीविष्णु शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं। (७।१६।४१-४२) अन्नदाता भयत्राता तथा विद्याप्रदश्च य:। तथा वित्तप्रदश्चैव पञ्चैते पितरः अन्न प्रदान करनेवाला, भयसे बचानेवाला, विद्याका दान करनेवाला, धन प्रदान करनेवाला और जन्म देनेवाला—

इन्द्रियोंको वशमें रखता है, उसके ऊपर जगत्पति भगवान्

ये पाँच पिता कहे गये हैं। (७।१७।२७) प्राप्य तीर्थं महापुण्यमस्नात्वा यस्तु गच्छति। स भवेदात्महा भूय इति स्वायम्भुवोऽब्रवीत्॥ जो परम पवित्र तीर्थमें पहुँचकर बिना स्नान किये ही

असत्य कभी नहीं बोलना चाहिये और न कभी व्यर्थं हि जीवितं तस्य विभवं प्राप्य येन वै॥ नोपार्जितं यशः शुद्धं परलोकसुखप्रदम्।

[श्रीमदेवीभागवतमहापुराण-

क्रुरे नराधमः॥

वैभव प्राप्त करके भी जिसने परलोकमें सुख देनेवाले पवित्र यशका उपार्जन नहीं किया, उसका जीवन व्यर्थ है। (७।१९।२४-२५) चिन्तया क्षीयते देहो नास्ति चिन्तासमा मृतिः।

चिन्तासे शरीर क्षीण हो जाता है, चिन्ताके समान तो मृत्यु भी नहीं है। (७।१९।४२) विचारियत्वा यो ब्रूते सोऽभीष्टं लभते नरः। जो मनुष्य सम्यक् सोच-समझकर बोलता है, वह अभीष्ट फल प्राप्त करता है। (७।२३।१२)

असत्यान्नरके गच्छेत्सद्यः असत्य भाषण करनेके कारण अधम मनुष्य शीघ्र ही भयानक नरकमें जाता है। (७।२३।१३) हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः। भिद्यते

अनात्मपदार्थींमें स्वरूपाध्यास समाप्त हो जाता है, सभी सन्देह दूर हो जाते हैं और सभी कर्म क्षीण हो जाते हैं।(७।३६।११) न यत्र वैकुण्ठकथासुधापगा

न साधवो भागवतास्तदाश्रयाः। न यत्र यज्ञेशमखा महोत्सवाः सुरेशलोकोऽपि न वै स सेव्यताम्॥

जहाँ भगवत्कथाकी अमृतमयी सरिता प्रवाहित नहीं होती, जहाँ उसके उद्गमस्थानस्वरूप भगवद्भक्त साधुजन निवास नहीं करते और जहाँ समारोहपूर्वक भगवान्

क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दुष्टे परावरे॥

इस जीवके हृदयकी ग्रन्थिका भेदन हो जाता है अर्थात्

उस कार्य-कारणरूप परमात्माको देख लेनेपर

यज्ञेश्वरकी पूजा-अर्चा नहीं होती, वह चाहे ब्रह्मलोक ही क्यों न हो, उसका सेवन नहीं करना चाहिये।(८।११।२५)

गङ्गा गङ्गेति यो ब्रुयाद्योजनानां शतैरिप।

मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति॥ ्रीटांnduisक Discord Server https://dsc.gg/dharma जी MADE WITH LOVE BY:Avinash/Sha

* श्रीमद्देवीभागवतसुभाषितसुधा * अङ्क] प्रकार उच्चारण करता है, वह सारे पापोंसे मुक्त हो जाता। जाता, वहाँ लक्ष्मी नहीं रहतीं। (९।४१।३०) यः पूजयेच्य सुरभिं स च पूज्यो भवेद्भवि॥ है तथा विष्णुलोकको प्राप्त करता है।(९।११।५०) किं वा ज्ञानेन तपसा जपहोमप्रपूजनै:। जो मनुष्य सुरिभ (गौ)-की पूजा करता है, वह किं विद्यया च यशसा स्त्रीभिर्यस्य मनो हृतम्॥ पृथ्वीलोकमें पूज्य हो जाता है। (९।४९।२१) जिसके मनको स्त्रियोंने हर लिया हो; उसके ज्ञान, तप, प्रायः शूरो न किं कुर्यादुत्पथे वर्त्मनि स्थितः॥ जप, होम, पूजन, विद्या अथवा यशसे क्या प्रयोजन! कुमार्गपर चलनेवाला शक्तिशाली व्यक्ति क्या नहीं कर लेता है? (१०।३।१८) (8188180) नष्टे स्वाहास्वधाकारे लोके कः शरणं भवेत्। नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि॥ अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्। लोकमें स्वाहा (यज्ञ, पूजा आदि) तथा स्वधाकार करोड़ों कल्प बीत जानेपर भी बिना भोग किये कर्मका (श्राद्धादि)-के विलुप्त हो जानेपर कौन शरण देनेवाला क्षय नहीं होता। अपने द्वारा किये गये शुभ अथवा अशुभ कर्मका होता है ? (१०।४।१५) अविमुक्तं न मोक्तव्यं सर्वथैव मुमुक्षुभिः।

करोड़ों कल्प बात जानेपर भी बिना भीग किये कर्मका क्षय नहीं होता। अपने द्वारा किये गये शुभ अथवा अशुभ कर्मका फल मनुष्यको भोगना ही पड़ता है। (९। २९। ६९-७०) पितुः शतगुणा माता गौरवे चेति निश्चितम्। मातुः शतगुणाः पूज्यो ज्ञानदाता गुरुः प्रभो॥ पिताकी अपेक्षा माता सौ गुनी श्रेष्ठ है, यह निश्चित है; किंतु ज्ञान प्रदान करनेवाला गुरु मातासे भी सौ गुना अधिक श्रेष्ठ होता है। (९। ३८। ६) ऐश्वर्यं विपदां बीजं ज्ञानप्रच्छन्नकारणम्।

है, ज्ञानका आच्छादन कर देनेवाला है, मुक्तिमार्गका कुठार है तथा भक्तिमें व्यवधान उत्पन्न करनेवाला है।(११४०।४६) महाविपत्तौ संसारे यः स्मरेन्मधुसूदनम्। विपत्तौ तस्य सम्पत्तिर्भवेदित्याह शङ्करः॥ जो मनुष्य इस संसारमें घोर विपत्तिके समयमें भगवान् मधुसूदनका स्मरण करता है, उसके लिये उस

मुक्तिमार्गकुठारश्च भक्तेश्च व्यवधायकम्॥

[लौकिक] ऐश्वर्य समस्त विपत्तियोंका बीजस्वरूप

विपत्तिमें भी सम्पत्ति उत्पन्न हो जाती है—ऐसा भगवान् शंकरने कहा है। (१।४०।९१) सर्वान्तरात्मा भगवान् सर्वदेहेष्ववस्थितः। यस्य देहात्स प्रयाति स शवस्तत्क्षणं भवेत्॥

सभीकी अन्तरात्मा भगवान् श्रीहरि सभी प्राणियोंके शरीरमें विराजमान रहते हैं। वे भगवान् जिसके शरीरसे निकल जाते हैं, वह प्राणी उसी क्षण शव हो जाता है। (१।४१।८) यत्र शङ्खध्विननीस्ति तुलसी न शिवार्चनम्। न भोजनं च विप्राणां न पद्मा तत्र तिष्ठिति॥ जहाँ शंखध्विन नहीं होती, तुलसी नहीं रहतीं,

शिवकी पूजा नहीं होती तथा ब्राह्मणोंको भोजन नहीं कराया ।

मोक्षकी अभिलाषा रखनेवाले प्राणियोंको अविमुक्त काशीक्षेत्रका त्याग कभी नहीं करना चाहिये।(१०।७।६) विप्रो वृक्षो मूलकान्यत्र सन्ध्या वेदः शाखा धर्मकर्माणि पत्रम्। तस्मान्मूलं यत्नतो रक्षणीयं छिन्ने मूले नैव वृक्षो न शाखा॥ विप्र वृक्ष है, सन्ध्याएँ ही उसकी जड़ें हैं, वेद उसकी

शाखाएँ हैं और सभी धर्म-कर्म उस वृक्षके पत्ते हैं। अतएव प्रयत्नके साथ मूल अर्थात् सन्ध्याकी ही रक्षा करनी चाहिये; क्योंकि मूलके कट जानेपर न तो वृक्ष रहता और न तो शाखा। (११।१६।६) अतिथिर्यस्य भग्नाशो गृहात्प्रतिनिवर्तते॥ स तस्मै दुष्कृतं दत्त्वा पुण्यमादाय गच्छति। जिसके घरसे अतिथि निराश होकर लौट जाता है,

वह अतिथि उसे अपना पाप देकर उसका पुण्य लेकर चला जाता है। (११।२२।१९-२०) कुर्यादन्यन वा कुर्यादनुष्ठानादिकं तथा। गायत्रीमात्रनिष्ठस्तु कृतकृत्यो भवेद् द्विजः॥ द्विज कोई दूसरा अनुष्ठान आदि कर्म करे अथवा

न करे, किंतु एकनिष्ठ होकर केवल गायत्रीका अनुष्ठान

कर ले तो वह कृतकृत्य हो जाता है। (१२।१।८) देहत्यागो वरस्तस्मान्मानो हि महतां धनम्। माने नष्टे जीवितं तु मृतितुल्यं न संशयः॥ [मानके लिये] शरीरका त्याग कर देना भी श्रेष्ठ

[मानके लिये] शरीरका त्याग कर देना भी श्रेष्ठ है; क्योंकि मान ही महापुरुषोंका धन है। मानके नष्ट हो जानेपर मनुष्यका जीवित रहना मृत्युके समान है, इसमें

कोई संशय नहीं है। (१२।८।४७)

श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण (उत्तरार्ध)—सिंहावलोकन पिछले वर्ष कल्याणके विशेषांकके रूपमें नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्। देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥ श्रीमद्देवीभागवत (पूर्वार्ध)-में छ: स्कन्धतककी कथा नरश्रेष्ठ भगवान् श्रीनर, नारायण और भगवती प्रकाशित की जा चुकी है। इस वर्ष श्रीमद्देवीभागवत सरस्वती तथा व्यासदेवको नमन करके पुराणकी चर्चा (उत्तरार्ध) प्रकाशित हो रहा है, जिसमें सप्तम स्कन्धसे करनी चाहिये। कथा प्रारम्भ हो रही है-श्रीमद्देवीभागवतमें वेदोंने भगवती देवीकी स्तुति सप्तम स्कन्ध करते हुए कहा है-व्यासजी राजा जनमेजयको कथा सुना रहे हैं। नमो देवि महामाये विश्वोत्पत्तिकरे शिवे। सूर्यवंशी तथा चन्द्रवंशी राजाओंके वंशका विस्तृत वर्णन सुननेकी इच्छा व्यक्त करनेपर राजा जनमेजयको व्यासजी सर्वभूतेशि मातः शङ्करकामदे॥ सूर्यवंश तथा चन्द्रवंशकी उत्पत्तिसे सम्बन्धित कथाओंका त्वं भूमिः सर्वभूतानां प्राणः प्राणवतां तथा। थीः श्रीः कान्तिः क्षमा शान्तिः श्रद्धा मेधा धृतिः स्मृतिः॥ विस्तारपूर्वक वर्णन करते हैं। सर्वप्रथम भगवान् विष्णुके नाभिकमलसे ब्रह्माजी

* सदा सेव्यं सदा सेव्यं देवीभागवतं नरै: *

त्वमुद्गीथेऽर्धमात्रासि गायत्रीव्याहृतिस्तथा। सर्वप्रथम भगवान् विष्णुके नाभिकमलसे ब्रह्माजी जया च विजया धात्री लज्जा कीर्तिः स्पृहा दया॥ उत्पन्न हुए; ब्रह्माजीने मरीचि, अंगिरा, अत्रि, विसष्ठ, (श्रीमद्देवीभा० १।५।५३-५५) पुलह, क्रतु और पुलस्त्य—इन सात मानस पुत्रोंका सृजन 'देवी! आप महामाया हैं, जगत्की सृष्टि करना किया। ब्रह्माजीकी गोदसे नारदजीका प्राकट्य हुआ, अँगूठेसे गापका स्वभाव है, आप कल्याणमय विग्रह धारण दक्षप्रजापित उत्पन्न हुए; इसी प्रकार सनक आदि अन्य करनेवाली एवं निर्गुणा हैं, अखिल जगत् आपका शासन मानसपुत्रोंकी भी उत्पत्ति हुई। बायें हाथके अँगूठेसे वीरिणी गानता है तथा भगवान् शंकरके आप मनोरथ पूर्ण किया नामकी एक सुन्दर कन्या उत्पन्न हुई, जो दक्षप्रजापितकी

'देवी! आप महामाया हैं, जगत्की सृष्टि करना आपका स्वभाव है, आप कल्याणमय विग्रह धारण करनेवाली एवं निर्गुणा हैं, अखिल जगत् आपका शासन मानता है तथा भगवान् शंकरके आप मनोरथ पूर्ण किया करती हैं। सम्पूर्ण प्राणियोंको आश्रय देनेके लिये आप पृथ्वीस्वरूपा हैं, प्राणधारियोंके प्राण भी आप ही हैं। धी, श्री, कान्ति, क्षमा, शान्ति, श्रद्धा, मेधा, धृति और स्मृति—ये सभी आपके नाम हैं। ॐकारमें जो अर्धमात्रा है, वह आपका ही निर्विशेष रूप है। गायत्रीमें आप प्रणव हैं। भूः, भुवः आदि व्याहृतियाँ भी आप ही हैं। जया, विजया, धात्री, लज्जा, कीर्ति, स्पृहा और दया—इन नामोंसे आप प्रसिद्ध हैं। माता! हम आपको नमस्कार करते हैं।'
सभी देवी-देवता और दानवोंके लिये ये चिन्मयी

दक्षप्रजापितके द्वारा वीरिणीके गर्भसे पाँच हजार पुत्र उत्पन्न हुए, जिन्हें ब्रह्माजीसे प्रजाकी वृद्धि करनेकी प्रेरणा मिली, परंतु देविष नारदने यह कहकर 'पृथ्वीकी वास्तविक परिमितिका बिना ज्ञान किये प्रजाकी सृष्टिकार्यमें तुमलोग कैसे तत्पर हो गये' उन्हें इस कार्यसे विरत कर दिया। दृढ़निश्चयी दक्षप्रजापितने प्रजाओंकी सृष्टिके लिये पुन: अन्य पुत्र उत्पन्न किये, परंतु उन्हें भी नारदजीने यही

कहकर इस कार्यसे विरत कर दिया। यह सब देखकर

दक्षने पुत्रशोकसे अत्यन्त कृपित होकर नारदजीको शाप

[श्रीमदेवीभागवतमहापुराण-

पराशक्ति ही आराधना करनेयोग्य हैं। त्रिलोकीमें इन दिया कि तुमने मेरे पुत्रोंको भ्रष्ट किया है, अतएव इस भगवतीसे बढ़कर अन्य कोई नहीं है—यह बात सत्य है, पापके परिणामस्वरूप तुम्हें भी गर्भमें वास करना होगा और सत्य है। वेद और शास्त्रोंका भी यही सच्चा तात्पर्य— मेरा पुत्र बनना पड़ेगा। इस प्रकार शापके प्रभावसे मुनि निर्णय है कि निर्गुण तथा सगुणरूपा चिन्मयी पराशक्ति ही नारद भी वीरिणीके गर्भसे उत्पन्न हुए, तदनन्तर दक्षने पुजनीय हैं। वीरिणीके गर्भसे साठ कन्याओंको उत्पन्न किया। उनमेंसे

पत्नी बनी।

अङ्क] * श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण ((उत्तरार्ध)—सिंहावलोकन * २१

तेरह कन्याएँ मरीचिपुत्र महात्मा कश्यपको अर्पित कर दीं	एवं अन्धे पति च्यवनऋषिकी सेवामें पूर्ण तत्पर थी। उन्हीं
तथा अन्य कन्याएँ धर्म, चन्द्रमा, भृगुमुनि, अरिष्टनेमि तथा	दिनों किसी समय सूर्यपुत्र दोनों अश्विनीकुमार क्रीड़ा
अंगिराऋषिको प्रदान कीं। उन्हीं कन्याओंके पुत्र तथा पौत्र	करते हुए च्यवनमुनिके आश्रमके पास आ पहुँचे। वे
देवता एवं दानवके रूपमें उत्पन्न हुए, जो परस्पर विरोधका	सर्वांगसुन्दरी सुकन्याको देखकर उसकी ओर कामासक्त हो
भाव रखते थे। देवता, दैत्य, यक्ष, सर्प, पशु और पक्षी—	गये। सुकन्यासे पूरी बात जानकर उन्होंने उसे च्यवनमुनिकी
सब-के-सब कश्यपजीसे उत्पन्न हुए, अत: यह सृष्टि	सेवासे विरत करनेका प्रयास किया, परंतु सुकन्याने
काश्यपी–सृष्टि कहलाती है।	पतिपरायणा होनेके कारण दृढ़तासे उनकी बातोंका विरोध
सूर्यवंशके वर्णनके प्रसंगमें सुकन्याकी कथा—	किया। सुकन्याकी दृढ़ता देखकर अश्विनीकुमारोंने भयभीत
राजा जनमेजय के पूछनेपर व्यासजी कहते हैं—देवताओंमें	होते हुए च्यवनऋषिको युवावस्था तथा सुन्दरता प्रदान
सूर्य सबसे श्रेष्ठ हैं, उनका नाम विवस्वान् भी है। उनके	करनेका प्रस्ताव रखा। साथ ही एक शर्त रखी—'एक
पुत्र वैवस्वत मनु थे। वैवस्वत मनुसे इक्ष्वाकु तथा शर्याति	सरोवरमें च्यवनमुनि तथा हमदोनों एक साथ स्नान करेंगे
आदि नौ पुत्र उत्पन्न हुए। शर्याति एक ऐश्वर्यशाली राजा	और तीनों एकरूप हो जायँगे, उनमेंसे तुम किसी एकको
थे, जिनकी चार हजार पितनयाँ थीं, उन सबके बीचमें	पतिरूपमें चुन लेना।' यह सुनकर सुकन्या असमंजसमें
सुकन्या नामकी एक सुन्दर पुत्री थी। उनके नगरसे थोड़ी	पड़ गयी। उसने सब बातें अपने पति च्यवनमुनिको
दूरपर एक सुन्दर सरोवर था; जहाँ महातपस्वी, भृगुवंशी	बतायीं। अन्तमें च्यवनमुनिकी आज्ञासे सुकन्याने इस
च्यवनमुनि तपस्यामें निमग्न थे। वे जल ग्रहण किये बिना	शर्तको स्वीकार कर लिया।
बहुत समयसे जगदम्बाका ध्यान करते थे। उनके शरीरको	एक सरोवरमें च्यवनऋषि तथा अश्विनीकुमारोंने एक
दीमकोंने पूरी तरहसे ढक लिया था। दीमकोंके कारण वे	साथ स्नान किया और तीनों एकरूप हो गये। सुकन्यासे
मिट्टीके ढेरसदृश हो गये थे।	कहा गया—इन तीनोंमेंसे तुम अपना पति चुन लो। सुकन्या
किसी समय वे राजा शर्याति अपनी रानियोंके साथ	अत्यन्त दुविधामें पड़ गयी, वह पतिपरायणा थी। उसने
विहार करते हुए उस उत्तम सरोवरपर आये। चंचल	भगवतीसे प्रार्थना की और भगवतीकी कृपासे अपने पति
स्वभाववाली उनकी पुत्री सुकन्या खेलती हुई वल्मीक बने	च्यवनऋषिको युवारूपमें प्राप्त कर लिया। च्यवनऋषि
हुए च्यवनमुनिके निकट पहुँच गयी। उस वल्मीकके भीतर	युवावस्था प्राप्तकर अत्यन्त प्रसन्न थे, उन्होंने प्रत्युपकारकी
च्यवनऋषिकी दोनों आँखें जुगुनूकी तरह चमक रही थीं।	दृष्टिसे अश्विनीकुमारोंको यज्ञमें सोमरस-पानका अधिकारी
सुकन्याने कौतूहलवश काँटेसे दोनों आँखोंको खोद दिया,	बनानेका वचन दिया।
जिससे रक्तप्रवाह होने लगा और च्यवनमुनि अन्धे हो गये।	एक दिन महाराज शर्याति अपनी कन्याको देखनेके
सुकन्याके इस कृत्यसे राजाके साथ आनेवाले सभी सैनिक	लिये च्यवनऋषिके आश्रममें पहुँचे। वहाँ युवा पतिके साथ
और मन्त्री कष्टमें पड़ गये, राजाको जब यह बात मालूम	अपनी कन्याको देखकर विस्मयमें पड़ गये। जब सब बातें
हुई तो उन्होंने च्यवनऋषिसे क्षमा-प्रार्थना की। च्यवनऋषिने	स्पष्ट हुईं तो च्यवनमुनिके आदेशसे शर्यातिने एक यज्ञका
यह इच्छा व्यक्त की कि आप सुकन्यासे मेरा विवाह कर	आयोजन किया। उस यज्ञमें च्यवनमुनिने अश्विनीकुमारोंको
दें, इससे राजा अत्यन्त चिन्तित हो गये, परंतु सुकन्याके	सोमरस–पानका अधिकारी बना दिया।
द्वारा स्वीकृतिपूर्वक आग्रह करनेपर राजाने च्यवनऋषिसे	सूर्यवंशी राजाओंका पावन चरित्र —सूर्यवंशमें
सुकन्याका विवाह कर दिया। सुकन्या वल्कल आदि	शर्यातिके पौत्र महाराज रेवत हुए, जो अपनी कन्याका वर
थारणकर च्यवनमुनिकी सेवामें संलग्न हो गयी।	जाननेके लिये पितामह ब्रह्माजीके पास सशरीर ब्रह्मलोक
सुकन्या पातिव्रत्यधर्मका पूर्ण पालन करती हुई वृद्ध	गये। ब्रह्माजीके आदेशसे उन्होंने अपनी कन्या रेवतीका

* सदा सेव्यं सदा सेव्यं देवीभागवतं नरै: * [श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण-परिस्थितिमें लोभवश धर्मका उल्लंघन मत करना। राजाको विवाह भगवान् श्रीकृष्णके ज्येष्ठ भ्राता शेषावतार श्रीबलरामजीसे चाहिये कि वह धर्मशास्त्रके अनुसार दण्डनीतिका पालन कर दिया। इसी वंशमें ककुतस्थ नामके प्रचण्ड पराक्रमी राजा करे और न्यायसे उपार्जित धनका निरन्तर संग्रह करे। हुए, जिन्होंने वृषभरूपधारी देवराज इन्द्रपर सवार होकर इस प्रकार पिताके समझानेपर राजकुमार त्रिशंकु देवताओंके लिये भी अजेय दानवोंको परास्त किया था। (सत्यव्रत)-ने कहा—मैं वैसा ही करूँगा। तत्पश्चात् महाराज अरुणने त्रिशंकुको राज्यपर विधिपूर्वक अभिषिक्त ककुत्स्थके पुत्र राजा पृथु हुए, जो भगवान् विष्णुके करके अपनी धर्मपत्नीके साथ वानप्रस्थ-आश्रमको ग्रहण अंशावतार कहे जाते हैं। इसी वंशमें यौवनाश्व नामक धार्मिक नरेश हुए, जो सन्तानहीन होनेके कारण अत्यन्त किया। चिन्तित थे। ब्राह्मणों तथा ऋषियोंने उनपर दयाकर उनसे राजा सत्यव्रत देवेश्वरी भगवतीकी उपासनामें तत्पर सन्तानके निमित्त एक यज्ञ कराया। पण्डितोंने जलसे रहते हुए राज्यपर सम्यक् शासन करने लगे। त्रिशंकुके पुत्र परिपूर्ण एक कलशका पुत्रप्राप्तिके निमित्त अभिमन्त्रण हरिश्चन्द्र हुए। कुछ समय बाद राजा त्रिशंकुने अपने पुत्र किया। यह विधिपूर्वक अभिमन्त्रित जल रानीके लिये रखा हरिश्चन्द्रको युवराज बनाकर मानवशरीरसे ही स्वर्गसुख गया था, जिसे प्यास लगनेके कारण भूलसे राजा यौवनाश्वने भोगनेका निश्चय किया। उन्होंने अपनी इच्छा महर्षि पी लिया। मन्त्रके प्रभावसे राजाने गर्भ धारण कर लिया, वसिष्ठजीसे व्यक्त की और इसके लिये यज्ञ करानेका उनकी दाहिनी कोखका भेदन करके मान्धाता उत्पन्न हुए, आग्रह किया। वसिष्ठजीने 'मानवशरीरसे स्वर्गमें निवास जिनका पालन स्वयं देवराज इन्द्रने किया। इस वंशके सभी अत्यन्त दुर्लभ है'-यह कहकर यज्ञ करानेमें अपनी राजा भगवती जगदम्बाके उपासक थे। इसी वंशमें महाराज असमर्थता व्यक्त की। राजा त्रिशंकुने वसिष्ठजीसे कहा कि अरुण हुए, उन न्यायप्रिय सम्राट्ने धर्म और सदाचारका यदि आप यज्ञ नहीं करायेंगे तो मैं किसी अन्यको आचार्य उल्लंघन करते देखकर अपने एकमात्र पुत्र सत्यव्रतको बनाकर यज्ञ सम्पन्न करूँगा। यह सुनकर वसिष्ठजीने क्रोधित होकर राजा त्रिशंकुको शाप दे दिया कि मरनेके अपने राज्यसे निकाल दिया। बाद भी तुम किसी प्रकार स्वर्ग नहीं प्राप्त कर सकते। सत्यव्रतने देवीकी उपासना की, जिससे वे पुनः पिताके प्रेमभाजन बन गये। महाराज अरुणने राजकुमार उनके शापसे राजा त्रिशंकु चाण्डाल बनकर जंगलकी ओर सत्यव्रतको अपना लिया तथा उसे अपने निकट बैठाकर चले गये। जंगलमें कल्याणकारिणी भगवती जगदम्बाका नीतिशास्त्रका उपदेश दिया—हे पुत्र! तुम सदा धर्ममें ही ध्यान करते हुए वे समय व्यतीत करने लगे। अपनी बुद्धि लगाना, न्यायपूर्वक प्राप्त धन ही ग्रहण करना। कुछ समय पूर्व विश्वामित्रजी अपनी भार्याको कभी असत्यभाषण मत करना, निन्दित मार्गका अनुसरण जंगलमें छोड़कर तपस्यामें रत थे। उन दिनों उनकी पत्नी मत करना। तुम्हें प्रतिदिन दान देते रहना चाहिये; द्यूत, अपने पुत्रोंके साथ अत्यधिक संकटमें पड़ गयी थी। तब मदिरा, अश्लील संगीत तथा वेश्याओंसे बचना चाहिये। सत्यव्रतने कई प्रकारसे उनकी रक्षा की। यह बात ब्राह्ममुहूर्तमें उठकर मनुष्यको स्नान आदि नित्य नियमोंसे विश्वामित्रजीकी पत्नीने विश्वामित्रजीको बतायी और कहा निवृत्त होकर भक्तिपूर्वक पराशक्ति जगदम्बाकी आराधना कि इनका हमपर बड़ा उपकार है, आपको भी इनका करनी चाहिये। तुम वेद-वेदान्तके पारगामी आदरणीय प्रत्युपकार करना चाहिये। तदनन्तर विश्वामित्रजी सत्यव्रत विद्वानोंकी विधिवत् पूजा करके सुयोग्य पात्रोंको गौ, भूमि (त्रिशंकु)-से मिले। सत्यव्रतने सशरीर स्वर्ग जानेकी इच्छा तथा सुवर्ण आदिका सदा दान करना। तुम कभी भी किसी व्यक्त की। विश्वामित्रजीने अपने तपके प्रभावसे उन्हें मुर्ख ब्राह्मणकी पूजा मत करना और मुर्ख व्यक्तिको कभी सशरीर स्वर्ग भेज दिया। स्वर्गलोकमें उनका चाण्डालशरीर भीं induism निंद्रcord Senver httes://dscang/dhatmart सुनिम्ह भीतिम हिए पृह्त Bर्द्र् vinsslab

अङ्क] * श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण	(उत्तरार्ध)—सिंहावलोकन * २३
<u> </u>	************************************
नीचेकी ओर धकेल दिया। यह बात विश्वामित्रजीको	पाकर उन्होंने अत्यन्त कुपित होकर राजा हरिश्चन्द्रको
मालूम होते ही उन्होंने अपने तपोबलसे उन्हें बीचमें ही	जलोदर रोगसे ग्रस्त होनेका शाप दे दिया। जलोदर रोगके
रोक दिया तथा नये स्वर्गलोकको सृष्टि करनी चाही।	कष्टसे अत्यधिक पीड़ित राजा हरिश्चन्द्रने अपने पुरोहित
इन्द्रको यह बात मालूम होनेपर उन्होंने विश्वामित्रजीसे	वसिष्ठजीसे इस रोगके नाशका निश्चित उपाय पूछा।
क्षमा-प्रार्थना की और उनके इच्छानुसार वे त्रिशंकुको दिव्य	वसिष्ठजीने उपाय बताया कि धनके द्वारा खरीदे गये पुत्रसे
शरीरवाला बनाकर अपनी पुरी ले गये।	आप यज्ञ कीजिये, इससे आप शापसे मुक्त हो जायँगे।
राजा हरिश्चन्द्रकी कथा —राजा हरिश्चन्द्र राजा	राजा हरिश्चन्द्रके राज्यमें अजीगर्त नामका एक दरिद्र
सत्यव्रत (त्रिशंकु)-के पुत्र थे, अपने पिताके स्वर्गगमनसम्बन्धी	ब्राह्मण रहता था, उसने धनके लोभमें अपने पुत्र शुन:शेपको
समाचारको सुनकर वे अत्यन्त हर्षित हुए और राज्यका	बलिपशुके निमित्त राजाको बेच दिया। यज्ञीय स्तम्भमें
शासन करने लगे। बहुत समय व्यतीत होनेपर भी जब उन्हें	वधके निमित्त बाँधे गये उस बालकको अत्यधिक व्याकुल
कोई सन्तान नहीं हुई तो वे अत्यन्त चिन्तित हुए। उन्होंने	देखकर तथा उसका कोलाहल सुनकर विश्वामित्रजी दयार्द्र
महर्षि वसिष्ठसे इसके लिये प्रार्थना की। वसिष्ठजीने	हो गये। उन्होंने राजासे शुन:शेपको छोड़नेका अनुरोध
सन्तानप्राप्तिके लिये वरुणदेवकी आराधनाका उपदेश	किया तथा कहा कि दयाके समान कोई पुण्य नहीं है और
किया। वरुणदेवकी उपासना करनेपर वे प्रसन्न होकर	हिंसाके समान कोई पाप नहीं है। यज्ञोंमें हिंसा करनेका जो
राजाके समक्ष प्रकट हुए। राजा हरिश्चन्द्रने उनसे	विधान बना, उसका उद्देश्य जिह्वालोलुपोंके जिह्वा-स्वादकी
सन्तानप्राप्तिका वर माँगा। 'पुत्र हो जानेपर उसे बलिपशु	पूर्तिके माध्यमसे उनमें यज्ञ करनेकी प्रवृत्ति बढ़ाना है, किंतु
बनाकर मेरा यज्ञ करें '—इस शर्तके साथ वरुणदेवने	यथासम्भव हिंसासे विरत रहना ही शास्त्रका आशय है।
राजाको पुत्रप्राप्तिका वर प्रदान किया। राजा हरिश्चन्द्रने भी	अपना कल्याण चाहनेवालेको अपने शरीरकी रक्षाके लिये
सन्तानहीन न रहूँ—यह सोचकर इसे स्वीकार कर लिया।	दूसरेके शरीरको नष्ट नहीं करना चाहिये। जो सभी
कुछ समय बाद पुत्र हो जानेपर वरुणदेव यज्ञके लिये	प्राणियोंके प्रति दयाभाव रखता है, जो कुछ भी प्राप्त हो

जाय उसीसे सन्तोष करता है और अपनी इन्द्रियोंको वशमें

रखता है, उसके ऊपर जगत्पति भगवान् शीघ्र प्रसन्न हो

जाते हैं। * हे नृपश्रेष्ठ! सभी प्राणियोंमें आत्मभावका चिन्तन

करना चाहिये, जिस प्रकार अपनेको देह प्रिय होती है, उसी प्रकार सभी जीवोंको अपना शरीर प्रिय होता है। जो

व्यक्ति अपनी कामनाकी पूर्तिके लिये किसी प्राणीका वध

करता है, दूसरी योनिमें जन्म लेकर वही जीव अपने

संहर्ताका वध कर देता है। राज्यमें जो कोई व्यक्ति पापकर्म करता है, तो उसके पापका छठा अंश राजाको भोगना

विश्वामित्रजीकी इन बातोंको सुनकर भी राजाने

पडता है, अत: राजाको इससे बचना चाहिये।

प्रकट हुए, राजाने जननाशौचसे निवृत्त होनेके अनन्तर यज्ञ

करनेकी बात कही। अशौचिनवृत्तिके बाद राजाने बच्चेके

दाँत आनेतकका बहाना बनाया। दाँत आ जानेपर राजाने

चुडाकर्मसंस्कारके बाद यज्ञ करनेका वरुणदेवको आश्वासन

दिया। चूडाकरणसंस्कार सम्पन्न होनेपर राजा हरिश्चन्द्रने वरुणदेवके प्रकट होनेपर उनसे प्रार्थना की कि बिना

उपनयनसंस्कारके द्विजत्वकी प्राप्ति नहीं होती, अत: इसके

बाद मैं अवश्य यज्ञ करूँगा। उपनयनसंस्कारके अनन्तर

राजाके पुत्र राजकुमार रोहित अपनी बलिकी बातसे सशंकित होकर नगरसे बाहर वनकी ओर भाग गये। राजा

अत्यन्त चिन्तित हुए। वरुणदेव भी प्रकट हुए, पुत्रको न

* दयासमं नास्ति पुण्यं पापं हिंसासमं निह्॥ रागिणां रोचनार्थाय नोदनेयं विचारय।आत्मदेहस्य रक्षार्थं परदेहनिकृन्तनम्॥ न कर्तव्यं महाराज सर्वतः शुभिमच्छता।दयया सर्वभूतेषु सन्तुष्टो येन केन च॥

सर्वेन्द्रियोपशान्त्या च तुष्यत्याशु जगत्पति:। (श्रीमद्देवीभा० ७।१६।३९—४२)

२४ * सदा सेव्यं सदा सेव	त्र्यं देवीभागवतं नरै: * [श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण-
*************************	******************************
शुन:शेपको मुक्त नहीं किया, तब विश्वामित्रजीने शुन:शेपके	आप मुझे बेचकर मुनिकी दक्षिणा चुका दें। उसी समय
निकट जाकर उसे वरुणदेवका मन्त्र प्रदान किया तथा	वहाँ एक ब्राह्मण प्रकट हुए, जिन्होंने ग्यारह करोड़ स्वर्ण-
वरुणदेवका स्मरण करते हुए मन्त्र-जप करनेका उपदेश	मुद्रा देकर रानी तथा राजकुमार रोहितको खरीद लिया,
दिया। शुन:शेपके इस प्रकार मन्त्र-जप करनेपर वरुणदेव	परंतु यह दक्षिणा विश्वामित्रके लिये पूर्ण नहीं थी। राजाने
प्रकट हुए, राजाने भी उनसे विनती करते हुए क्षमा-याचना	उनकी दक्षिणाको पूर्ण करनेके लिये स्वयंको भी बेचनेका
की। वरुणदेवने दयार्द्र होकर शुन:शेपको बन्धनमुक्त	प्रयास किया, उसी समय चाण्डालका रूप धारणकर
कराया और राजाको भी रोगमुक्त कर दिया।	धर्मदेव वहाँ आ पहुँचे। राजा चाण्डालके हाथों बिकना नहीं
राजा हरिश्चन्द्र अपनी स्त्री तथा पुत्रके साथ आनन्दपूर्वक	चाहते थे, परंतु विश्वामित्रके क्रोधयुक्त क्रूर वचनोंके
राज्य करने लगे। कुछ समय बाद महर्षि विश्वामित्र कुछ	कारण उन्होंने विश्वामित्रकी आज्ञासे चाण्डालका दासत्व
कारणवश उनसे रुष्ट हो गये। वे कपटपूर्वक एक	स्वीकार कर लिया। इसके बदलेमें उन्हें दक्षिणाके लिये
ब्राह्मणका वेश बनाकर राजासे मिले। राजाने उनसे कहा—	पूर्ण धनकी प्राप्ति हो गयी।
मैंने राजसूय यज्ञ किया है, आप जो भी कुछ माँगेंगे, मैं	राजा हरिश्चन्द्रको चाण्डालने श्मशानमें मृत व्यक्तिका
उसे पूरा करूँगा। उस ब्राह्मणके प्रभावमें आकर राजाने	वस्त्र तथा कर आदि लेनेका काम सौंप दिया।
अपना सम्पूर्ण राज्य विश्वामित्रको दान कर दिया। बादमें	एक समयकी बात है, राजकुमार रोहित खेलते हुए
विश्वामित्रजीने इस दानकी सांगता–सिद्धिहेतु ढाई भार	कुश उखाड़ने लगा। उसी समय एक सर्पने बालक
स्वर्णकी दक्षिणा देनेके लिये कहा; क्योंकि किसी भी	रोहितको डस लिया। उसकी मृत्यु हो गयी। करुण विलाप
दानकी सांगता–दक्षिणाके बिना वह दान सफल नहीं होता।	करती हुई रानी शैब्या उसके निष्प्राण शरीरको लेकर
राजा हरिश्चन्द्र अत्यधिक चिन्ताग्रस्त हो गये, दक्षिणाके	श्मशान आयी, वहाँ उसने राजा हरिश्चन्द्रको चाण्डालके
लिये विश्वामित्रके क्रूर वचनोंको सुनकर वे अपनी पत्नी	रूपमें देखा। प्रारम्भमें रानी अपने पितको पहचान नहीं
तथा पुत्रके साथ काशीपुरी आये। अपने पतिको अत्यधिक	पायी तथा राजा हरिश्चन्द्र भी अपनी पत्नी और पुत्रको
चिन्ताग्रस्त देखकर उनकी पत्नीने उनसे कहा—हे महाराज!	नहीं पहचान सके। रानीने जब विलाप करना प्रारम्भ किया
आप चिन्ता छोड़कर अपने धर्मका पालन कीजिये। अपने	तो कुछ देर बाद राजा अपनी पत्नी और पुत्रको पहचानकर
सत्य वचनका अनुपालनरूप जो धर्म है, उससे बढ़कर	मूर्च्छित हो गये। मूर्च्छा टूटनेपर पति-पत्नी दोनोंने दु:खसे
दूसरा कोई अन्य धर्म मनुष्यके लिये नहीं है। जिस	विह्वल होकर यह निश्चय किया कि पुत्रकी चितापर हम
व्यक्तिका वचन मिथ्या हो जाय; उसके अग्निहोत्र,	दोनों भी अपना शरीर त्याग देंगे। जैसे ही उन्होंने चिता
वेदाध्ययन, दान आदि सभी कृत्य निष्फल हो जाते हैं।	निर्माणकर भगवती जगदम्बाका ध्यान करते हुए चितामें
इसी बीच एक वेदपारंगत विद्वान् ब्राह्मण वहाँ आ	प्रवेश करना चाहा, उसी समय तत्काल पितामह ब्रह्मा,
गये, रानीने राजासे कहा—ब्राह्मण तीनों वर्णोंका पिता कहा	इन्द्रादि सभी देवगण धर्मदेवको आगेकर वहाँ उपस्थित हो
जाता है, पुत्रके द्वारा पितासे धन लिया जा सकता है; अत:	गये। देवगणोंने राजा हरिश्चन्द्रकी अत्यधिक प्रशंसा की
इनसे धनके लिये प्रार्थना की जाय। राजाने उत्तर दिया—	और कहा कि आप अपनी भार्या और पुत्रको साथमें लेकर
मैं क्षत्रिय हूँ, इसलिये किसीसे दान लेनेकी इच्छा नहीं कर	स्वर्गके लिये प्रस्थान कीजिये। तत्पश्चात् चिताके मध्यभागमें
सकता। याचना करना ब्राह्मणोंका कार्य है, क्षत्रियोंका नहीं।	रोहितपर अपमृत्युका नाश करनेवाली अमृतमयी वृष्टि
ब्राह्मण चारों वर्णोंका गुरु है और सर्वदा पूजनीय है।	होने लगी तथा विपुल पुष्पोंकी वर्षा एवं दुन्दुभियोंकी तेज
इसलिये गुरुसे याचना नहीं करनी चाहिये।	ध्विन होने लगी, मृतपुत्र रोहित जीवित हो गया।
इसपर रानीने कहा—अपने सत्यकी रक्षाके लिये	राजा हरिश्चन्द्रने कहा कि मैं अयोध्यावासियोंको

अङ्क] * श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण	(उत्तरार्ध)—सिंहावलोकन * २५
\$	*************************************
छोड़कर अकेले स्वर्गलोक नहीं जाऊँगा, सबको साथ	उत्पन्न हो गये। उन-उन स्थानोंपर भगवान् शंकर अनेक
लेकर ही जा सकता हूँ। इन्द्रकी अनुमति मिलनेपर पुत्र	विग्रह धारण करके प्रकट हो गये। भगवान् शिवने
रोहितका राजतिलककर राजा हरिश्चन्द्र समस्त अयोध्या-	देवताओंसे कहा कि जो लोग इन स्थानोंपर महान् श्रद्धाके
वासियोंके साथ विमानपर आरूढ़ होकर स्वर्ग चले गये।	साथ भगवती शिवाकी आराधना करेंगे, उनके लिये कुछ
भगवती शताक्षी और शाकम्भरीके प्राकट्यकी	भी दुर्लभ नहीं रहेगा; क्योंकि उन स्थानोंपर साक्षात्
कथा—प्राचीनकालमें दुर्गम नामक एक अत्यन्त भयंकर	भगवती पराम्बा अपने अंगोंमें सदा निहित हैं। इन तीर्थोंकी
महादैत्य था, ब्रह्माजीके वरदानसे समस्त वेदमन्त्र उसके	यात्रा करनी चाहिये तथा विधिपूर्वक भगवतीकी विशिष्ट
पास आ गये और ब्राह्मणोंको विस्मृत हो गये। वेदविहीन	पूजा करनी चाहिये और ब्राह्मणों, सुवासिनी स्त्रियों,
होनेसे स्नान, संध्या, नित्य होम, श्राद्ध, यज्ञ और जप	कुमारिकाओं तथा वटुओं आदिको भोजन कराना चाहिये।
आदिका लोप हो गया। इसलिये देवताओंको हव्य मिलना	भगवती पार्वतीके प्राकट्यकी कथा— सतीके
और पृथ्वीपर वर्षा होना—दोनों बन्द हो गये। चारों ओर	दग्ध हो जानेपर भगवान् शिव व्याकुल होकर इधर-उधर
अकाल पड़ गया, समस्त प्राणी असमय कालकवलित	भ्रमण करने लगे। अन्तमें मनको समाधिस्थ करके
होने लगे। जगत्की इस विषम स्थितिको देखकर ब्राह्मणोंने	भगवतीके ध्यानमें निमग्न हो गये। उसी समय तारक नामक
हिमालयपर्वतपर जाकर भगवतीकी स्तुति की और उनसे	एक महान् असुर उत्पन्न हुआ, जिसने अपनी तपस्याद्वारा
दुःख दूर करनेकी प्रार्थना की। भगवती उनकी करुणापूर्ण	ब्रह्माजीसे यह वरदान प्राप्त कर लिया कि भगवान् शंकरके
स्थिति देखकर द्रवित हो गयीं। उन्होंने शताक्षी-रूप धारण	औरस पुत्रद्वारा ही उसकी मृत्यु हो सकेगी। वरके प्रभावसे
किया, उनके शत नेत्रोंसे अविरल जलधारा प्रवाहित होने	उन्मत्त वह असुर महान् अत्याचारी हो गया था। यह देखकर
लगी, जिससे धरती प्लावित हो गयी। उनके हाथोंमें	भगवान् विष्णुने देवताओंकी प्रार्थनापर उन्हें भगवतीकी
विभिन्न प्रकारके शाक और फल थे, अत: उन्हें शाकम्भरी	शरणमें जानेकी सलाह दी। देवताओंकी स्तुतिसे प्रसन्न
कहा जाने लगा। इस प्रकार सम्पूर्ण प्राणियोंके लिये खाद्य-	होकर देवीने कहा—'गौरी नामक मेरी शक्ति हिमालयके
व्यवस्थाकर और पृथ्वीको सस्य-श्यामला बना भगवतीने	घर उत्पन्न होगी, आपलोग उसे शिवको प्रदान करा
दुर्गम दैत्यसे युद्धकर उसका संहार कर दिया। उन	दीजियेगा।' इस प्रकार हिमालयकी पुत्रीके रूपमें भगवतीका
शक्तिस्वरूपा भगवतीके लिये उस क्षुद्र दैत्यका वध करना	पार्वती-अवतार हुआ।
कौन बड़ी बात है; क्योंकि उन्हींकी शक्तिसे तो भगवान्	भगवतीद्वारा हिमालयको देवीगीताका उपदेश—
शंकर और भगवान् विष्णु भी शक्तिमान् होते हैं।	पराम्बा भगवतीने हिमालयसे माया तथा अपने स्वरूपका
शक्तिपीठोंकी उत्पत्तिकी कथा—भगवान् शंकरके	तात्त्विक विवेचन किया। तत्पश्चात् देवीने अपनी सर्वव्यापकता
प्रति द्वेषबुद्धि रखनेवाले दक्षप्रजापतिके यज्ञमें भगवती	बताते हुए हिमालय तथा देवताओंको अपने विराट्रूपके
सतीने आत्मदाह कर दिया था, उस समय भगवान्	दर्शन कराये, जिसे देखकर देवगण भयभीत हो गये, इसपर
शंकरकी कोपाग्निसे प्रलयकी-सी स्थिति उत्पन्न हो गयी,	भगवतीने पुनः अपना सौम्यरूप धारण कर लिया। देवीने
परंतु देवताओंकी प्रार्थनापर वे शान्तचित्त हुए। इसके	हिमालयको अपने मन्त्र 'ह्रीं' का उपदेश दिया तथा अष्टांगयोग
अनन्तर भगवान् शिवने यज्ञस्थलपर जाकर भगवती सतीके	और कुण्डलिनीजागरणकी विधि बतायी। इसके बाद उन्होंने
शरीरको अपने कन्धेपर रख लिया और उन्मत्त होकर	परब्रह्मके स्वरूप और अपनी भक्तिकी महिमा तथा उसके
भ्रमण करने लगे। तब भगवान् विष्णुने बाणोंसे सतीके	प्रकारका वर्णन किया; साथ ही उन्होंने अपने तीर्थों, व्रतों
विभिन्न अंगोंको काटकर गिरा दिया। एक सौ आठकी	और पूजन-विधान का वर्णन करनेके अनन्तर बताया कि
संख्यामें कटे वे अंग जहाँ-जहाँ गिरे, वहाँ-वहाँ शक्तिपीठ	यह देवीगीता (अध्याय ३२—४०) अत्यन्त गोपनीय तथा

* सदा सेव्यं सदा सेव्यं देवीभागवतं नरै: * [श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण-समस्त कामनाओंको पूर्ण करनेवाली है। ऐसा कहकर वे देनेवाली उस पृथ्वीको देवदेवेश्वर श्रीहरिने अपने दाढ़ोंपर भगवती वहींपर अन्तर्धान हो गयीं और देवीके दर्शनसे सभी उठा लिया। उन्हें देखकर देवाधिदेव ब्रह्मा उनकी स्तुति देवता अत्यन्त प्रसन्न हो गये। तदनन्तर वे देवी हैमवती करने लगे। इस प्रकार सृष्टिकर्ता ब्रह्माजीके द्वारा स्तुत हिमालयके यहाँ उत्पन्न हुईं, जो गौरी नामसे प्रसिद्ध हुईं। होनेपर भगवान् श्रीहरिने उस समय वहाँ आये महान् असुर बादमें वे शंकरजीको प्रदान की गयीं। तत्पश्चात् कार्तिकेय तथा भयंकर दैत्य हिरण्याक्षको अपनी गदासे मार डाला। उत्पन्न हुए और उन्होंने तारकासुरका संहार किया। तत्पश्चात् भगवान् श्रीहरिने पृथ्वीको अपनी दाढ्से उठाकर लीलापूर्वक जलपर स्थापित कर दिया। इसके बाद वे अष्टम स्कन्ध लोकनाथेश्वरभगवान् अपने लोकको चले गये। अष्टम स्कन्धका प्रारम्भ नारदजीकी इस जिज्ञासासे होता है कि यह जगत् किससे उत्पन्न होता है, किससे महाराज मनुकी वंश-परम्पराका वर्णन—नारदजीसे श्रीनारायण कहते हैं-पृथ्वीको यथास्थान प्रतिष्ठित करके इसकी रक्षा होती है, किसके द्वारा इसका संहार होता है? किस पूजासे, किस जपसे और किस ध्यानसे तथा किस भगवान् जब वैकुण्ठ चले गये तब ब्रह्माजीने अपने पुत्र ज्ञानसे इस मोहमयी मायाका नाश हो जाता है। नारदजीके स्वायम्भुव मनुको समुचितरूपसे प्रजाओंकी सृष्टिकी प्रश्नके उत्तरमें श्रीनारायण कहते हैं - इस जगत्का एकमात्र प्रेरणा करते हुए यह उपदेश दिया-शास्त्रोंमें वर्णित धर्मका तत्त्व भगवती जगदम्बा ही हैं। तीनों गुणों (सत्त्व, रज, आचरण करो तथा वर्णाश्रम-व्यवस्थाका पालन करो और तम)-से युक्त होनेके कारण वे भगवती ही सम्पूर्ण यज्ञके स्वामी परमपुरुषका भजन करो। इस क्रमसे प्रवृत्त जगत्की रचना करती हैं, वे ही पालन करती हैं और वे रहनेपर प्रजाकी वृद्धि होती रहेगी। ही संहार करती हैं। पिताकी इस आज्ञाको पृथ्वीपति स्वायम्भुव मनुने प्रजाकी सृष्टिके लिये मनुका देवी-आराधन-हृदयमें धारण कर लिया और वे प्रजाकी सृष्टि करने लगे। स्वायम्भुव मनु पितामह ब्रह्माजीके पुत्र थे। उनकी पत्नीका मनुसे प्रियव्रत और उत्तानपाद दो पुत्र और आकूति, नाम शतरूपा था। ब्रह्माजीकी आज्ञासे वे प्रजाकी सृष्टिके देवहृति तथा प्रसृति-ये तीन कन्याएँ हुईं। उनकी प्रसृति लिये भगवती जगदम्बाकी भक्तिपूर्वक तपस्या करने लगे। नामक कन्याका दक्षप्रजापितसे विवाह हुआ, जिनकी उनकी तपस्यासे प्रसन्न होकर भगवती जगदम्बाने उन्हें कन्याओंके सन्तानके रूपमें देवता, पशु और मानव आदि वरदान दिया कि प्रजासृष्टिका तुम्हारा कार्य निर्विघ्नतापूर्वक उत्पन्न हुए। मनुके पुत्र महाराज प्रियव्रतने पृथ्वीकी सात सम्पन्न होगा और इसमें निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। बार प्रदक्षिणा की, जिससे उनके रथके पहियोंके निशानसे पूरी पृथ्वीमें सात समुद्र और सात द्वीप बन गये। उन वराहावतारकी कथा-मनुने जब प्रजासृष्टि करनी महाराज प्रियव्रतके दस पुत्र हुए, उनमेंसे तीन पुत्र वीतराग चाही तो देखा कि पृथ्वी जलमें डूबी हुई है-यह बात उन्होंने ब्रह्माजीसे बतायी। इसपर ब्रह्मा आदिपुरुषका होकर परमहंस भावसे रहने लगे और शेष सात पुत्रोंको चिन्तन करने लगे। उनके ध्यान करते ही सहसा उनकी उन्होंने एक-एक द्वीपका अधिपति बना दिया। उन सातों द्वीपोंके नाम इस प्रकार हैं—जम्बूद्वीप, प्लक्षद्वीप, शाल्मलिद्वीप, नासिकाके अग्रभागसे एक अंगुष्ठ-परिमाणका वाराह-शिश् निकला, जो देखते-ही-देखते पर्वताकार हो गया। वहाँ कुशद्वीप, क्रौंचद्वीप, शाकद्वीप और पुष्करद्वीप। उपस्थित देवताओं और विप्रवरोंने उत्तम स्तोत्रों तथा ऋक्, जम्बूद्वीपमें कुल नौ वर्ष हैं, भारतवर्ष इसीके अन्तर्गत साम और अथर्ववेदसे सम्भूत पवित्र सूक्तोंसे आदिपुरुषकी है। अन्य वर्षोंके नाम इस प्रकार हैं—इलावृतवर्ष, भद्राश्ववर्ष, स्तृति प्रारम्भ कर दी। उनकी स्तृति सुनकर भगवान् श्रीहरि हरिवर्ष, केतुमालवर्ष, रम्यकवर्ष, हिरण्मयवर्ष, उत्तरकुरुवर्ष उन्हें अनुग्रहीत करते हुए जलमें प्रविष्ट हो गये। उस समय तथा किम्पुरुषवर्ष। इन सभी वर्षोंमें भगवान् श्रीहरिके अHipdyism निहर्प्रेकि Server https://dsc.gg/dharma-| अभिकृष्टि WITH के VER & Avinash/Sha

"	(उत्तरार्ध)—सिंहावलोकन * २७ कक्षक्रक्षक्षक्षक्षक्षक्षक्षक्षक्षक्षक्षक्षक्षक
	अपने हृदयमें धारण करते हुए हयग्रीवरूप देवेश्वर
ठीक मध्यमें ब्रह्माजीकी पुरी है। यह दस हजार योजनके	श्रीहरिकी स्तुति करते हैं और उनके गुणोंका संकीर्तन
विस्तारमें विराजमान है।	करते हैं।
सर्वव्यापी भगवान् विष्णुके बायें पैरके अँगूठेके	हरिवर्ष में पापोंका नाश करनेवाले, योगसे युक्त
नखसे आघातके कारण ब्रह्माण्डके ऊपरी भागमें हुए	आत्मावाले तथा भक्तोंपर अनुग्रह करनेवाले भगवान्
छिद्रके मध्यसे गंगाजी प्रकट हुईं और वे स्वर्गके शिखरपर	नृसिंह प्रतिष्ठित हैं। भगवान्के गुणतत्त्वोंको जाननेवाले
आकर रुक गर्यों। सम्पूर्ण प्राणियोंके पापोंका नाश करनेवाली	परमभागवत असुर प्रह्लाद उनके दयामय रूपका दर्शन
तथा सम्पूर्ण देवनदियोंकी स्वामिनी भगवती गंगा स्वर्गके	करते हुए भक्ति-भावसे युक्त होकर उनकी स्तुति करते हैं।
शिखरपर जहाँ आयी थीं, वह स्थान तीनों लोकोंमें	भक्त प्रह्लाद प्रार्थना करते हैं—हे प्रभो! अखिल
विष्णुपद नामसे विख्यात है। मोक्षस्वरूपिणी ये गंगा तपस्या	जगत्का कल्याण हो, सभी प्राणी अपने मनमें एक-दूसरेके
- करनेवाले पुरुषोंको सिद्धि देनेवाली हैं—यह जानकर	कल्याणका चिन्तन करें। घर, स्त्री, पुत्र, धन और बन्धु-
सिद्धगण उनमें निरन्तर स्नान करते रहते हैं। विष्णुपदसे	बान्धवोंमें हमारी आसक्ति न हो; यदि आसक्ति हो तो
चलकर गंगा चन्द्रमण्डलका भेदन करती हुईं ब्रह्मलोकमें	भगवान्के प्रियजनोंमें हो। भगवान्में जिस पुरुषकी निष्काम
पहुँचीं; वहाँसे सीता, चतुः (चक्षु), अलकनन्दा और	भक्ति होती है; उस पुरुषके हृदयमें धर्म, ज्ञान आदि सभी
भद्रा—इन चार नामोंसे चारों दिशाओंमें प्रवाहित हुईं।	गुणोंसहित देवता निवास करते हैं। जैसे मछलियोंको जल
अन्तमें वे नदियोंके स्वामी समुद्रमें मिल गयीं।	अत्यन्त प्रिय है, उसी प्रकार साक्षात् भगवान् श्रीहरि ही
नौ वर्षोंमें भारतवर्ष कर्मक्षेत्र कहा गया है। अन्य आठ	सभी देहधारियोंकी आत्मा हैं। इस प्रकार दैत्यपित प्रह्लाद
वर्ष पृथ्वीपर रहते हुए भी स्वर्गभोग प्रदान करनेवाले हैं।	भगवान् नृसिंहकी भक्तिपूर्वक निरन्तर स्तुति करते रहते हैं।
ये वर्ष स्वर्गमें रहनेवाले पुरुषोंके शेष पुण्योंको भोगनेके	केतुमालवर्ष में भगवान् श्रीहरि कामदेव का रूप
स्थान हैं।	धारण करके प्रतिष्ठित हैं। इस वर्षकी अधीश्वरी समुद्रतनया
जम्बूद्वीपके विभिन्न वर्षोंमें आदिपुरुष नारायणके	लक्ष्मीजी निरन्तर उनकी उपासना करती हैं।
विभिन्न स्वरूपोंकी उपासना—जम्बूद्वीपके सभी नौ	रमा कहती हैं—हे भगवन्! जो स्त्री आपके
वर्षोंमें आदिपुरुष नारायण लोकोंपर अनुग्रह करनेकी	चरणकमलोंके पूजनकी कामना करती है और अन्य
दृष्टिसे भगवतीकी आराधना करते हुए लोकोंसे पूजा	वस्तुको अभिलाषा नहीं करती, उसकी सभी कामनाएँ पूर्ण
स्वीकार करनेके निमित्त अपनी विभिन्न मूर्तियोंके रूपमें	हो जाती हैं, किंतु जो किसी एक कामनाको लेकर आपकी
समाहित होकर वहाँ विराजमान रहते हैं।	उपासना करती है, उसे आप केवल वही वस्तु देते हैं और
इलावृतवर्ष में भगवान् श्रीहरि ब्रह्माजीके नेत्रसे उत्पन्न	भोगके पश्चात् जब वस्तु नष्ट हो जाती है तो उसके लिये
भवरूपमें अपनी भार्या भवानीके साथ निवास करते हैं।	उसे दु:खी होना पड़ता है।
वहाँ भवानीकी सेवामें संलग्न अपने करोड़ों गणोंसे घिरे	इन्द्रियसुख पानेका विचार रखनेवाले ब्रह्मा, रुद्र, देव
हुए देवेश्वर भगवान् शिव सभी प्राणियोंके कल्याणार्थ	तथा दानव आदि मेरी (लक्ष्मीकी) प्राप्तिके लिये कठिन
तामस प्रकृतिवाली अपनी ही संकर्षण नामक मूर्तिका	तप करते हैं, किंतु आपके चरणकमलोंकी उपासना
एकाग्रमनसे ध्यानयोगके द्वारा चिन्तन करते हुए आराधना	करनेवालेके अतिरिक्त अन्य कोई भी मुझे प्राप्त नहीं कर
करते हैं।	सकता; क्योंकि मेरा हृदय सदा आपमें ही लगा रहता है।
इसी प्रकार भद्राश्ववर्ष में भद्रश्रवा नामक धर्मपुत्र	इस प्रकार लक्ष्मीजी तथा अन्य प्रजापति आदि प्रमुख
भगवान् वासुदेवकी हयग्रीव नामसे प्रसिद्ध हयमूर्तिको	अधीश्वर भी कामनासिद्धिके लिये कामदेवरूपधारी श्रीहरिकी

* सदा सेव्यं सदा सेव्यं देवीभागवतं नरै: * [श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण-वधके लिये ही नहीं है, अपितु इसका मुख्य उद्देश्य तो स्तुति करते हैं। रम्यकवर्षमें मनुजी भगवान् श्रीहरिकी देव-दानव-मनुष्योंको शिक्षा देना है। आप धीर पुरुषोंके आत्मा और पूजित सर्वश्रेष्ठ **मत्स्यमूर्ति**की निरन्तर इस प्रकार स्तुति प्रियतम भगवान् वास्देव हैं। त्रिलोकीकी किसी भी वस्तुमें आपकी आसक्ति नहीं है। न उत्तम कुलमें जन्म, न करते रहते हैं। मनुजी कहते हैं-हे अजन्मा प्रभो! जब ऊँची सुन्दरता, न वाक्-चातुर्य, न तो बुद्धि और न तो श्रेष्ठ योनि ही आपकी प्रसन्नताके कारण हो सकते हैं। यही कारण लहरोंसे युक्त प्रलयकालीन समुद्र विद्यमान था, तब आप औषिधयों और लताओंकी निधिस्वरूप पृथ्वी तथा मुझको है कि हे भगवन्! आपने इन सभी गुणोंसे रहित हम लेकर उस समुद्रमें उत्साहपूर्वक क्रीडा कर रहे थे। जगत्के वनवासी वानरोंसे मित्रता की है। समस्त प्राणिसमुदायके नियन्ता आप भगवान् मत्स्यको इस प्रकार किम्पुरुषवर्षमें वानरश्रेष्ठ हनुमान् भगवान् नमस्कार है। श्रीरामकी भक्तिपूर्वक स्तुति करते हुए उनके गुण गाते हैं। **भारतवर्ष और उसकी महिमा**— भारतवर्षमें आदिपुरुष इस प्रकार राजाओंमें श्रेष्ठ मनुजी सभी संशयोंको समूल समाप्त कर देनेवाले मत्स्यरूपमें अवतीर्ण श्रीहरिकी श्रीनारायण स्वयं विराजमान रहते हैं तथा देवर्षि नारद भक्तिपूर्वक उपासना करते हुए यहाँ प्रतिष्ठित रहते हैं। विभिन्न प्रकारसे उनकी स्तुति करते हैं। श्रीनारायण हिरण्मयवर्षमें भगवान् श्रीहरि कूर्मरूप धारण करके भारतवर्षकी अनेक निदयों तथा पर्वतोंका वर्णन करते हैं, विराजमान हैं। यहाँ अर्यमाके द्वारा उन योगेश्वर भगवान्की इसके साथ ही देवर्षि नारदके समक्ष भारतवर्षकी महिमाका पूजा तथा स्तुति की जाती है। भी वर्णन करते हैं। अर्यमा कहते हैं - हे प्रभो! अनेक रूपोंमें दिखायी श्रीनारायण कहते हैं-भारतवर्षमें निवास करनेवाले देनेवाला यह जगत् यद्यपि मिथ्या ही निश्चय होता है सभी लोगोंको अनेक प्रकारके भोग सुलभ होते हैं, अपने तथापि यह मायासे प्रकाशित होनेवाला आपका रूप है। वर्णधर्मके नियमोंका पालन करनेसे मोक्षतक निश्चित-एकमात्र आप ही जरायुज, स्वेदज, अण्डज, उद्भिज्ज, रूपसे प्राप्त हो जाता है, इसी कारण स्वर्गके निवासी वेदज्ञ चर-अचर, देवता, ऋषि, पितर, भूत, इन्द्रिय, स्वर्ग, मुनिगण भारतवर्षकी महिमाका इस प्रकार वर्णन करते हैं - अहो! जिन जीवोंने भारतवर्षमें जन्म प्राप्त किया है, आकाश, पृथ्वी, पर्वत, नदी, समुद्र, द्वीप, ग्रह और नक्षत्र— इन नामोंसे विख्यात हैं। विद्वानोंने असंख्य नाम, रूप और उनका कितना पुण्य है ? उनपर स्वयं श्रीहरि ही प्रसन्न हो गये हैं। इस सौभाग्यके लिये तो हमलोग भी लालायित आकृतियोंवाले आपमें जिन चौबीस तत्त्वोंकी संख्या निश्चित की है; वह भी वस्तुत: आपका स्वरूप है। ऐसे रहते हैं। सांख्यसिद्धान्तस्वरूप आपको मेरा नमस्कार है। हम सबने कठोर यज्ञ, तप, व्रत, दान आदिके द्वारा इस प्रकार अर्यमा हिरण्मयवर्षके अन्य अधीश्वरोंके जो यह तुच्छ स्वर्ग प्राप्त किया है, इससे क्या लाभ! स्वर्गके साथ सभी प्राणियोंको उत्पन्न करनेवाले कूर्मरूप भगवान् निवासियोंकी आयु एक कल्पकी होनेपर भी उन्हें पुन: श्रीहरिकी स्तुति तथा उनका गुणानुवाद करते हैं। जन्म लेना पड़ता है, इसकी अपेक्षा भारतभूमिमें अल्प उत्तरकुरुवर्षमें प्रेमरससे परिपूर्ण पृथ्वीदेवी दैत्योंका आयुवाला होकर भी जन्म लेना श्रेष्ठ है; क्योंकि यहाँ धीर नाश करनेवाले यज्ञपुरुष आदिवराहरूप श्रीहरिकी उपासना पुरुष अपने इस मर्त्यशरीरसे किये हुए सम्पूर्ण कर्म करती हैं। भगवान्को अर्पण करके उनका अभयपद प्राप्त कर लेते किम्पुरुषवर्षमें श्रीहनुमान्जी सम्पूर्ण जगत्के शासक हैं। भारतवर्षमें मानवयोनि प्राप्त करके भी जो प्राणी आदिपुरुष भगवान् श्रीसीतारामजीकी इस प्रकार स्तुति आवागमनरूप बन्धनसे छूटनेका प्रयत्न नहीं करते, वे करते हैं-हे प्रभो! आपका मनुष्यावतार केवल राक्षसोंके व्याघ्रकी फाँसीसे मुक्त होकर भी फल आदिके लोभसे

अङ्क] * श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण	(उत्तरार्ध)—सिंहावलोकन * २९

जंगली पशुओंकी भाँति पुन: बन्धनमें पड़ जाते हैं।	भूत, प्रेत और पिशाचोंके लोक हैं। इससे नीचे अन्तरिक्ष
अतः अबतक स्वर्गसुख भोग लेनेके बाद हमारे	और अन्तरिक्षसे सौ योजन नीचे पृथ्वी है।
पूर्वकृत यज्ञ और पूर्तकर्मों (बावली, कुँआ, धर्मशाला	अधोलोकोंका वर्णन—पृथ्वीके नीचे सात विवर
आदि बनवाने)-से यदि कुछ भी पुण्य अवशिष्ट हो तो	हैं, प्रत्येक विवर दस हजार योजन लम्बा, चौड़ा और गहरा
उसके प्रभावसे हमें इस भारतवर्षमें भगवान्की स्मृतिसे	है। इनके नाम क्रमश: अतल, वितल, सुतल, तलातल,
युक्त मनुष्यजन्म मिले; क्योंकि श्रीहरि अपना भजन	महातल, रसातल और पाताल हैं। दानवशिल्पी मयने इनमें
करनेवाले प्राणियोंका परम कल्याण करते हैं।	अनेक भव्य प्रासादोंका निर्माण किया है, जिनमें महाबली
श्रीनारायण कहते हैं—हे नारद! इस प्रकार स्वर्गको	दैत्य, नाग तथा दानव रहते हैं। सुतललोकमें भक्तश्रेष्ठ
प्राप्त देवता, सिद्ध और महर्षिगण भारतवर्षकी उत्तम	बलिका निवास है, जिनके द्वारपालके रूपमें स्वयं श्रीहरि
महिमाका गान करते हैं।	विराजमान रहते हैं। पाताललोकसे तीस हजार योजन नीचे
खगोलवर्णन—त्रिलोकीकी सीमाका निर्धारण करनेके	भगवान् अनन्त विराजमान हैं। यह गोलाकार समग्र
लिये भगवान्ने लोकालोकपर्वतका निर्माण किया। इस	भूमण्डल उनके सिरपर एक सरसोंके दानेकी भाँति
पर्वतके एक ओरके लोक प्रकाशित होते हैं और दूसरी	सुशोभित होता है।
ओर अन्धकार बना रहता है।	नरकों तथा नरक प्रदान करनेवाले विविध
पृथ्वी तथा स्वर्गके बीच ब्रह्माण्डके केन्द्रमें सूर्यकी	पापोंका वर्णन—त्रिलोकीके भीतर दक्षिण दिशामें पृथ्वीसे
स्थिति है। ये जीवसमूहोंकी आत्मा और नेत्रेन्द्रियके स्वामी	नीचे तथा अतललोकसे ऊपर पितृलोक है, वहाँ पितृराज
हैं। ये अपने तेजसे तीनों लोकोंको प्रकाशित तथा प्रतप्त	भगवान् यम अपने गणोंके साथ विराजमान रहते हैं। वे
करते हैं। शीघ्र, सम तथा मन्द—ये इनकी तीन गतियाँ हैं।	मृतप्राणियोंके कर्मोंके अनुसार फलका विधान करते हैं
जब इनका रथ उत्तरायणमार्गपर रहता है तब ध्रुवद्वारा	तथा पापियोंको यातना भोगनेके लिये विभिन्न नरकोंमें
उसका कर्षण होनेसे उसकी गित मन्द हो जाती है, जिससे	भेजते हैं। ये नरक बड़े भयंकर हैं।
दिनकी अवधि बड़ी और रात्रि छोटी होती है। इसके	नारदजीके प्रश्न करनेपर श्रीनारायण विभिन्न नरकोंको
विपरीत दक्षिणायनमार्गपर इनकी शीघ्र गति होती है,	प्राप्त करानेवाले पापोंका वर्णन करते हुए कहते हैं—
जिससे दिन छोटा और रात्रि बड़ी होती है। विषुवरेखापर	जो पुरुष दूसरेके धन, स्त्री और सन्तानका हरण
इनकी सम गति रहती है।	करता है, वह भयानक 'तामिस्र' नामक नरकमें गिराया
सूर्यसे एक लाख योजनकी ऊँचाईपर चन्द्रमा स्थित	जाता है। जो व्यक्ति किसीके पतिको धोखा देकर उसकी
हैं। चन्द्रमाके स्थानसे तीन लाख योजन ऊपर नक्षत्रमण्डल	स्त्रीके साथ भोग करता है, वह यमदूतोंद्वारा 'अन्धतामिस्र'
है, उससे दो लाख योजन ऊपर शुक्रग्रह तथा शुक्रसे दो	नरकमें गिराया जाता है। यह शरीर ही मैं हूँ और यह धन,
लाख योजन ऊपर बुध ग्रह है। बुधसे दो लाख योजन ऊपर	स्त्री-पुत्र आदि मेरे हैं—ऐसा सोचकर जो अन्य प्राणियोंसे
मंगल तथा उससे भी दो लाख योजन ऊपर बृहस्पति है।	द्रोह करता हुआ केवल अपने परिवारके भरण-पोषणमें
बृहस्पतिसे दो लाख योजन ऊपर शनि तथा शनिसे ग्यारह	प्रतिदिन लगा रहता है, वह स्वार्थलोलुप प्राणी 'रौरव'
लाख योजन ऊपर सप्तर्षिमण्डल है, ये सप्तर्षिगण	नरकमें गिरता है।
ध्रुवलोककी प्रदक्षिणा करते हैं, जो उनसे तेरह लाख योजन	अत्यन्त क्रोधी, निर्दयी तथा मूर्ख पुरुष जो पशु-
- ऊपर है। परमभागवत ध्रुव यहाँ विराजमान हैं। सूर्यसे दस	पक्षियोंको मारकर उनका मांस पकाता है, यमराजके दूत
हजार योजन नीचे राहुमण्डल है, इससे नीचे सिद्धों, चारणों	उसे 'कुम्भीपाक' नरकमें डालते हैं।
और विद्याधरोंके लोक हैं। इन लोकोंसे नीचे यक्षों, राक्षसों,	जो अपने पिता, विप्र तथा ब्राह्मणसे द्रोह करता है,

३० * सदा से	ाव्यं सदा सेव्यं	देवीभागवतं नरै: *	[श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण-
******************************		*************	************
वह 'कालसूत्र' नामक नरकमें डाला जाता है	1 5	हैं, दुश्मनोंकी सम्पत्ति नष्ट	करते हैं, गाँव तथा धनिकोंको
विपत्तिका समय न रहनेपर भी जो अपने	वेदविहित व	लूटते हैं, वे 'सारमेयादन'	नामक नरकमें गिरते हैं।
मार्गसे हटकर पाखण्डके मार्गका आश्रय लेत	ा है, उसे	जो दान और धनके	आदान–प्रदानमें साक्षी बनकर
यमदूत 'असिपत्रवन' नरकमें डाल देते हैं।	7	सदा झूठ बोलते हैं, वे 'उ	अवीचि' नामक भयंकर नरकमें
जो राजा अथवा राजपुरुष अधर्मका सह	हारा लेकर ी	गिरते हैं।	
प्रजाको दण्डित करता है, वह 'सूकरमुख' नाम	कि नरकमें	जो ब्राह्मण अथवा अ	ान्य कोई भी प्रमादवश मद्यपान
गिराया जाता है।	7	करता है तथा जो क्षत्रिय	और वैश्य सोमपान करता है,
जो पुरुष खटमल आदि जीवोंकी हिंसा कर	रता है, वह	उसका 'अय:पान' नामक	नरकमें पतन होता है।
'अन्धकूप' नामक नरकमें गिरता है।		जो द्विज अपने घर प	मधारे हुए अतिथियोंको पापपूर्ण
जो कुछ भी धन आदि प्राप्त हो, उसे श	गस्त्रविहित व	दृष्टिसे देखता है, उसे	यमराजके सेवक 'पर्यावर्तन'
पंचयज्ञोंमें विभक्त किये बिना जो भोजन करत	ता है, वह	नरकमें गिराते हैं।	
'कृमिभोजन' नामक नरकमें गिरता है।		श्रीनारायण कहते हैं-	—पापकर्म करनेवाले मनुष्योंको
जो प्राणी किसीसे चोरी या बलात् रत्न	छीन लेता व	यातना देनेके लिये ये अनेव	o प्रकारके नरक हैं। इसी प्रकार
है, उसे 'सन्दंश' नामक नरकमें गिराया जाता	है। उ	और भी सैकड़ों तथा हज	ारों नरक हैं, उनमेंसे कुछ ही
जो पुरुष अथवा स्त्री अगम्यके साथ सम	गगम करते 🏻	बताये गये हैं। बहुत-से न	ारकोंका वर्णन नहीं किया गया
हैं, यमदूत उन्हें 'तप्तसूर्मि' नामक नरकमें गिराव	कर कोड़ेसे	है। पापी मनुष्य अनेक या	तनाओंसे भरे इन नरकोंमें जाते
पीटते हैं।	š	हैं और धर्मपरायणलोग सु	खप्रद लोकोंमें जाते हैं।
जो घोर पापी मनुष्य जिस किसीके साथ	व्यभिचार	देवीका पूजन तथा	आराधन करनेवाले सदाचारी
करता है, उसे 'शाल्मलि' नरकमें गिराया जात	ग है।	पुरुषको नरकमें नहीं जाना	पड़ता। सुपूजित होनेपर भगवती
जो राजा या राजपुरुष पाखण्डी बनक	त्र धर्मकी ^{प्}	जगदम्बा संसारसागरसे मन्	गुष्यका उद्धार कर देती हैं।
मर्यादा तोड़ते हैं, वे 'वैतरणी' नामक नरकमें	गिरते हैं।	देवीकी उपासनावे	ठ विविध प्रसंग —भगवती
जो लोग सदाचारके नियमोंसे विमुख तथा :	शौचाचारसे ः	जगदम्बाका पूजन प्रत्येक	नर-नारीको अवश्य करना
रहित होकर शूद्राओंके पति बन जाते हैं तथा निर्ल	जितापूर्वक -	चाहिये। उनके पूजनमें प्रत	येक तिथि, प्रत्येक वार, प्रत्येक
पशुवत् आचरण करते हैं, यमराजके दूत उन्हें वि	त्रष्ठा, मूत्र,	नक्षत्र, प्रत्येक योग और !	प्रत्येक करण प्रशस्त है अर्थात्
कफ, रक्त और मलसे युक्त 'पूयोद' नामक नरकमें	गिराते हैं।	किसी भी क्षण उनका ध्य	ान–पूजन किया जा सकता है।
जो द्विजातिगण कुत्ते और गधे आदिको पार	नते हैं तथा	नृतीया तिथि भगवतीको वि	त्रशेष प्रिय होनेसे प्रत्येक माहमें
शास्त्रके विपरीत पशुओंका वध करते हैं, उ	न्हें यमदूत ः	उस तिथिको प्रशस्त नैवेद्यर	पे उनकी महुएके वृक्षमें भावना
'प्राणरोध' नामक नरकमें गिराकर बाणोंसे वेध	ाते हैं। व	करके पूजा करनी चाहिये।	उनके पूजनसे मनुष्यकी सम्पूर्ण
जो दम्भी मनुष्य अभिमानपूर्वक यज्ञोंका अ	गयोजनकर व	कामनाएँ सिद्ध हो जाती	हैं, वह पापरहित निर्मल बुद्धि
उसमें पशुओंकी हिंसा करते हैं, उन्हें 'विशस	न नामक !	प्राप्त कर लेता है तथा उसे	नरक–सम्बन्धी किंचिन्मात्र भी
नरकमें गिराया जाता है।	•	भय नहीं होता।	
जो मूर्ख द्विज कामसे मोहित होकर सवप	र्ग भार्याको	नवम	ा स्कन्ध
वीर्यपान कराता है, उसे 'लालाभक्ष' नामक नरव	क्में गिराया	नवम स्कन्धका प्र	रम्भ मूलप्रकृति और उनके
जाता है।		विभिन्न अंशोंके वर्णनसे ह	
Hinduian प्राह्म प्रमित्रं /ही	s <mark>eagg∤d</mark> hai	rma र्भिक ्रिह्म्भार्म्स	HUONE HE

अङ्क] * श्रीमदेवीभागवतमहापुराण	(उत्तरार्ध)—सिंहावलोकन * ३१

क्या है, उनका लक्षण क्या है तथा वे किस प्रकार प्रकट	तुलसी भी भगवतीकी प्रधान अंशस्वरूपा हैं। वे सती सदा
हुईं?' श्रीनारायण कहते हैं—हे वत्स! देवी प्रकृतिके	भगवान् विष्णुके चरणपर विराजती हैं और उनकी
सम्पूर्ण लक्षण कौन बता सकता है; फिर भी धर्मराजके	आभूषणरूपा हैं। कश्यपकी पुत्री मनसादेवी भी शक्तिके
मुखसे जो मैंने सुना है, उसे यत्किंचित्रूपसे बताता हूँ।	प्रधान अंशसे प्रकट हुई हैं, वे भगवान् शंकरकी प्रिय
महामायासे युक्त परमेश्वर सृष्टिके निमित्त अर्धनारीश्वर	शिष्या हैं तथा अत्यन्त ज्ञानविशारद हैं। सभी मन्त्रोंकी
बन गये, जिनका दक्षिणार्ध भाग पुरुष और वामार्ध भाग	अधिष्ठात्री देवी मनसा ब्रह्मतेजसे देदीप्यमान रहती हैं।
प्रकृति कहा जाता है। जैसे अग्निमें दाहिका शक्ति	भगवतीकी प्रधान अंशस्वरूपा जो मातृकाओंमें पूज्यतम
अभिन्नरूपसे स्थित है, वैसे ही परमात्मा और प्रकृतिरूपा	देवसेना हैं, वे ही षष्ठीदेवी के नामसे कही गयी हैं। वे
शक्ति भी अभिन्न है। इसीलिये योगीजन स्त्री और पुरुषका	पुत्र-पौत्र आदि प्रदान करनेवाली तथा तीनों लोकोंकी
भेद नहीं करते और सभी कुछ ब्रह्म है—ऐसा निरन्तर चिन्तन	जननी हैं। वे मूलप्रकृतिकी षष्ठांशस्वरूपा होनेके कारण
करते हैं। भगवती मूलप्रकृति सृष्टि करनेकी कामनासे	षष्ठीदेवी कही जाती हैं। जल, स्थल, आकाश और गृहमें
भक्तोंपर अनुग्रह करनेहेतु पाँच रूपोंमें अवतरित हुईं।	भी बालकोंके कल्याणमें ये सदा निरत रहती हैं।
गणेशमाता दुर्गा शिवप्रिया तथा शिवरूपा हैं, जो	मंगलचिण्डका देवी भी मूलप्रकृतिकी अंशस्वरूपा हैं। वे
पूर्णब्रह्मस्वरूपा हैं। शुद्ध सत्त्वरूपा महालक्ष्मी धनधान्यकी	प्रकृतिदेवीके मुखसे प्रकट हुई हैं और सभी प्रकारके मंगल
अधिष्ठात्री तथा आजीविकास्वरूपिणी हैं, वे वैकुण्ठमें	प्रदान करनेवाली हैं। उत्पत्तिके समय वे मंगलरूपा तथा
अपने स्वामी विष्णुकी सेवामें तत्पर रहती हैं। वे स्वर्गमें	संहारके समय कोपरूपिणी हैं। पराशक्तिके प्रधान अंशस्वरूपसे
स्वर्गलक्ष्मी, राजाओंमें राज्यलक्ष्मी, गृहस्थ मनुष्योंके घरमें	कमललोचना भगवती काली का प्राकट्य हुआ है, वे
गृहलक्ष्मी और सभी प्राणियों तथा पदार्थोंमें शोभारूपमें	शुम्भ-निशुम्भके साथ युद्धकालमें जगदम्बा दुर्गाके ललाटसे
- विराजमान रहती हैं। भगवती सरस्वती परमात्माकी वाणी,	प्रकट हुईं। ये धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष—सबकुछ देनेमें
बुद्धि, विद्या एवं ज्ञानकी अधिष्ठात्री हैं तथा सभी	समर्थ हैं। भगवती प्रकृतिके प्रधान अंशस्वरूपसे भगवती
ु विद्याओंकी विग्रहरूपा हैं; वे देवी मनुष्योंको बुद्धि,	वसुन्धरा प्रकट हुईं हैं। इनके बिना सम्पूर्ण चराचर जगत्
कवित्वशक्ति, मेधा, प्रतिभा और स्मृति प्रदान करती हैं।	निराधार हो जाता है।
भगवती सावित्री चारों वर्णों, वेदांगों, छन्दों, सन्ध्यावन्दनके	तदनन्तर श्रीनारायण प्रकृतिकी कलाओं तथा देवताओंकी
मन्त्रों एवं समस्त तन्त्रोंकी जननी हैं। पंचप्राणोंकी अधिष्ठात्री,	भार्याओंका वर्णन करते हैं। स्वाहा अग्निदेवकी भार्या हैं।
पंचप्राणस्वरूपा तथा सभी शक्तियोंमें परम सुन्दर भगवती	यज्ञदेवकी पत्नी दीक्षा तथा दक्षिणा हैं। पितृदेवोंकी पत्नी
राधा परमात्मप्रभु श्रीकृष्णकी रासलीलाकी अधिष्ठात्री हैं।	स्वधादेवी हैं। वायुदेवकी पत्नी स्वस्तिदेवी, गणपतिकी
जिन्होंने व्रजमण्डलमें वृषभानुकी पुत्रीके रूपमें जन्म लिया	पत्नी पुष्टिदेवी, भगवान् अनन्तदेवकी पत्नी तुष्टिदेवी,
तथा ब्रह्मादि देवोंके द्वारा भी जो अदृष्ट थीं, वे ही श्रीराधा	सत्यदेवकी पत्नी सतीदेवी, मोहकी पत्नी दयादेवी और
भारतवर्षमें सर्वसाधारणको दृष्टिगत हुईं।	पुण्यदेवकी पत्नी प्रतिष्ठादेवी हैं। उद्योगदेवकी पत्नी
प्रत्येक भुवनमें सभी देवियाँ तथा नारियाँ इन्हीं	ु क्रियादेवी हैं, जो सभीके द्वारा पूजित तथा मान्य हैं।
प्रकृतिदेवीके अंश, कला तथा कलांशसे उत्पन्न हैं।	अधर्मकी पत्नी मिथ्यादेवी हैं, जिन्हें सभी धूर्तजन पूजते
भगवतीके पूर्णावताररूपमें प्रधान अंशस्वरूपा	हैं। सत्ययुगमें ये मिथ्यादेवी तिरोहित रहती हैं, त्रेतायुगमें
देवियोंका वर्णन—लोकपावनी गंगा भगवतीकी प्रधान	सूक्ष्मरूपसे रहती हैं, द्वापरमें आधे शरीरवाली होकर रहती
अंशस्वरूपा हैं, वे भगवान् विष्णुके श्रीविग्रहसे प्रकट हुईं	हैं, किंतु कलियुगमें ये सर्वत्र व्याप्त रहती हैं और अपने
हैं तथा सनातनरूपसे ब्रह्मद्रव होकर विराजती हैं। विष्णुवल्लभा	भाई कपटके साथ घर-घर घूमती रहती हैं। सुशीलकी दो

3

* सदा सेव्यं सदा सेव्यं देवीभागवतं नरै: * [श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण-पिलयाँ हैं—शान्ति और लज्जा। ज्ञानकी तीन पिलयाँ हैं— सपत्नीक ब्रह्माजी और वाम अर्धांशसे महादेव प्रकट हुए। बुद्धि, मेधा और धृति। रुद्रकी पत्नी कालाग्नि हैं। कालकी महाविराट्की उत्पत्ति—परिपूर्णतम भगवान् श्रीकृष्ण तीन पत्नियाँ हैं—सन्ध्या, रात्रि और दिवा। लोभकी दो और चिन्मयी राधासे एक बालककी उत्पत्ति हुई, जिसे उन देवीने ब्रह्माण्डगोलकके जलमें छोड़ दिया। वह बालक पत्नियाँ हैं—क्षुधा और पिपासा। कालकी दो पुत्रियाँ मृत्यु और जरा हैं, जो ज्वरकी ब्रह्माजीके आयुपर्यन्त जलमें ही पड़ा रहा। तत्पश्चात् वह पित्नयाँ हैं। निद्राकी एक पुत्री तन्द्रा तथा दूसरी प्रीति है, महाविराट् और क्षुद्रविराट् रूपमें—दो भागोंमें विभक्त हो ये दोनों सुखकी पत्नियाँ हैं। वैराग्यकी दो पत्नियाँ अद्भा गया। शतकोटिसूर्योंकी प्रभावाले उस महाविराट्के प्रत्येक और भक्ति सभीकी पूज्या हैं। रोमकूपमें अखिल ब्रह्माण्ड स्थित थे। प्रत्येक ब्रह्माण्डमें प्रकृतिदेवीकी अन्य बहुत-सी कलाएँ हैं, जिनका ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि विद्यमान थे। महाविराट्के अंशसे वर्णन यहाँ दिया गया है। ग्रामदेवियाँ तथा नारियाँ सभी ही क्षुद्रविराट् प्रकट हुए, वे श्यामवर्ण पीताम्बरधारी प्रकृतिकी कलाएँ हैं। इसीलिये किसी नारीके अपमानसे जनार्दन जलकी शय्यापर शयन करते हैं। प्रकृतिका अपमान माना जाता है। जिसने पति-पुत्रवती गोलोकमें गंगाका प्रादुर्भाव—एक समय गोलोकमें सुवासिनी ब्राह्मणीका पूजन कर लिया तथा जिसने आठ कार्तिक पूर्णिमाके अवसरपर राधा-महोत्सव मनाया जा वर्षकी कन्याका पूजन कर लिया, उसने मानो स्वयं रहा था। उस समय ब्रह्माजीसे प्रेरित होकर भगवान् शंकर प्रकृतिदेवीकी पूजा कर ली। भारतवर्षमें प्रकृतिदेवीकी मधुर गीत गाने लगे। इस मधुर गानको सुनकर सभी देवता जो-जो कलाएँ प्रकट हुईं, वे सभी तथा प्रत्येक ग्राम और सम्मोहित-से हो गये और भगवान् श्रीकृष्ण तथा राधाजी नगरमें जो ग्रामदेवियाँ हैं, वे सभी पूजित हैं। तो विगलित होकर द्रवरूप ही हो गये और वही ब्रह्मद्रव भगवान् श्रीकृष्णसे देव-देवियोंका प्राकट्य— भगवती गंगाके रूपमें जाना गया। वे ही भगवती गंगा इसके बाद दूसरे अध्यायमें परब्रह्म श्रीकृष्ण और श्रीराधासे इक्ष्वाकुवंशी राजा भगीरथकी तपस्यासे उनके साठ हजार प्रकट चिन्मय देवताओं एवं देवियोंका वर्णन प्राप्त होता है। पूर्वजोंको तारनेके लिये पृथ्वीपर आयीं। भगवान् श्रीकृष्ण ही सर्वप्रपंचके स्रष्टा तथा सृष्टिके लक्ष्मी, सरस्वती तथा गंगाका परस्पर शापवश एकमात्र बीजस्वरूप हैं। वे स्वेच्छामय प्रभु सृष्टिकी **भारतवर्षमें पधारना**—लक्ष्मी, सरस्वती तथा गंगा—तीनों इच्छासे वामभागसे स्त्री और दक्षिणांशसे पुरुषरूपमें विभक्त भगवान् विष्णुकी भार्या हैं। एक समयकी बात है, भगवती हो गये। सुखपूर्वक क्रीडा करते हुए उन देवीके शरीरसे गंगा प्रीतियुक्त मधुर मुसकानके साथ भगवान्की ओर देख जो स्वेद उत्पन्न हुआ, उससे विश्वगोलकका निर्माण हुआ रही थीं, यह देखकर सरस्वती कुपित हो गयीं। भगवती और उस स्वेदरूप जलके अधिष्ठाता वरुणदेव तथा उनकी लक्ष्मीने उन्हें शान्त करनेका प्रयास किया, परंतु कुद्ध पत्नी वरुणानी प्रकट हुईं। उन देवीके नि:श्वाससे वायुका सरस्वतीने गंगा और लक्ष्मी दोनोंको नदी बनकर मृत्युलोकमें सृजन हुआ और उसके अधिष्ठाता वायुदेव एवं उनकी जानेका शाप दे दिया। निर्दोष लक्ष्मीको ईर्घ्यावश सरस्वतीने पत्नी तथा पुत्र उत्पन्न हुए। उन देवीके जिह्वाग्रसे शाप दे दिया है—यह देखकर गंगाने भी सरस्वतीको नदी सरस्वतीदेवी प्रकट हुईं तथा उनके वामांशसे कमला और होकर मर्त्यलोकमें जानेका शाप दे दिया। भगवान् श्रीहरिने भी उन सबके शापोंका अनुमोदन करते हुए उन्हें पाँच दक्षिणांशसे राधिका प्रकट हुईं। तब भगवान् श्रीकृष्ण भी द्विधारूप हो गये। उनके वामांशसे जो चतुर्भुजरूप प्रकट हजार वर्षतक भारतवर्षमें रहनेका आदेश दिया। इसीलिये हुआ, वे ही नारायण विष्णु हैं, उन्हें उन्होंने कमला और लक्ष्मीजी 'पद्मा', गंगाजी 'भागीरथी' और सरस्वतीजी सरस्वतीको पत्नीरूपमें प्रदान किया। राधिका द्विभुज 'सरस्वतीनदी' के रूपमें भारतवर्षमें आयीं। भगवान् श्रीकृष्णकी हृदयेश्वरी बनीं। भगवान्के नाभिकमलसे पृथ्वीकी उत्पत्तिका प्रसंग—पृथ्वीकी उत्पत्तिके

अङ्क] * श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण	(उत्तरार्ध)—सिंहावलोकन * ३३

कई प्रकार बताये गये हैं, उनमें मुख्य कथा इस प्रकार है—	गये। भगवान् विष्णुने देवताओंको शंखचूड़के जन्म एवं
महाविराट् पुरुष अनन्त कालसे जलमें स्थित रहते हैं,	वरदान आदिको सब कथा सुनायी तथा उसको मृत्युका
यह स्पष्ट है। समयानुसार उनके भीतर सर्वांगव्यापी	उपाय बताते हुए उसे मारनेके लिये भगवान् शंकरको एक
शाश्वत मन प्रकट हुआ। तत्पश्चात् वह मन उस	त्रिशूल प्रदान किया तथा यह भी बताया कि तुलसीका
महाविराट् पुरुषके सभी रोमकूपोंमें प्रविष्ट हो गया। हे	सतीत्व नष्ट होनेपर ही उसकी मृत्यु सम्भव हो सकेगी।
मुने! बहुत समयके पश्चात् उन्हीं रोमकूपोंसे पृथ्वी प्रकट	इसका भी आश्वासन भगवान् विष्णुने देवताओंको दिया।
हुई। उस महाविराट्के जितने रोमकूप हैं, उन सबमें सर्वदा	अपने कथनानुसार भगवान् विष्णुने छलपूर्वक तुलसीका
स्थित रहनेवाली यह पृथ्वी एक-एक करके जलसहित	सतीत्व नष्ट किया, उधर भगवान् शंकरने त्रिशूलद्वारा
बार-बार प्रकट होती और छिपती रहती है। यह पृथ्वी	शंखचूड़का वध कर डाला। पतिव्रता तुलसीको भगवान्के
सृष्टिके समय प्रकट होकर जलके ऊपर स्थित हो जाती	द्वारा छलपूर्वक अपना सतीत्व नष्ट करनेकी जानकारी हुई
है और प्रलयके समय अदृश्य होकर जलके भीतर स्थित	तो अत्यन्त शोकसन्तप्त होकर उसने भगवान्को पाषाण
रहती है। प्रत्येक ब्रह्माण्डमें यह पृथ्वी पर्वतों तथा वनोंसे	होनेका शाप दे दिया।
सम्पन्न रहती है, सात समुद्रोंसे घिरी रहती है और सात	तुलसीकी कारुणिक अवस्था देखकर उसे समझाते
द्वीपोंसे युक्त रहती है।	हुए भगवान्ने कहा—हे भद्रे! तुमने भारतमें रहकर मेरे
इसके अनन्तर पृथ्वीकी पूजा, ध्यान, स्तवन और	लिये बहुत समयतक तपस्या की है और साथ ही इस
उनका मूल मन्त्र आदि यहाँ प्रस्तुत किया गया है। पृथ्वीका	शंखचूड़ने भी उस समय तुम्हारे लिये दीर्घ समयतक
मूल मन्त्र है—'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं वसुधायै स्वाहा।'	तपस्या की थी। तुम्हें पत्नीरूपमें प्राप्त करनेके बाद अन्तमें
भगवान् विष्णुने प्राचीन कालमें इसी मन्त्रसे पृथ्वीका पूजन	वह गोलोक चला गया। अब मैं तुम्हें तुम्हारी तपस्याका
किया था।	फल प्रदान करना उचित समझता हूँ। तुम्हारा यह शरीर
भगवती तुलसीका कथा-प्रसंग—भगवती तुलसी	गण्डकीनदीके रूपमें प्रसिद्ध होगा। तुम्हारा केशसमूह
मूलप्रकृतिकी ही प्रधान अंश हैं। प्रारम्भमें वे गोलोकमें	पुण्यवृक्षके रूपमें प्रकट होगा, जो तुलसी नामसे प्रसिद्ध
तुलसी नामकी गोपी थीं। भगवान्के चरणोंमें उनका	होगा। देवपूजनमें प्रयुक्त होनेवाले समस्त पुष्पों और पत्रोंमें
अतिशय प्रेम था। रासलीलामें उनकी श्रीकृष्णके प्रति	तुलसीकी प्रधानता होगी। सभी लोकोंमें निरन्तर तुम मेरे
अनुरक्ति देखकर राधाजीने कुपित होकर उन्हें मानवयोनिमें	सान्निध्यमें रहोगी।
जन्म लेनेका शाप दे दिया। इससे वे भारतवर्षमें राजा	मैं भी तुम्हारे शापसे पाषाण बनकर भारतवर्षमें
धर्मध्वजकी पुत्री हुईं। गोलोकमें ही सुदामा नामका एक	गण्डकीनदीके तटके समीप निवास करूँगा।* चारों वेदोंके
गोप भी था, जो भगवान् श्रीकृष्णका मुख्य पार्षद था, उसे	पढ़ने तथा तपस्या करनेसे जो पुण्य प्राप्त होता है, वह पुण्य
भी किसी कारणसे क्रुद्ध होकर राधाजीने दानवयोनिमें जन्म	शालग्रामशिलाके पूजनसे निश्चितरूपसे सुलभ हो जाता है।
लेनेका शाप दे दिया। उनके शापसे अगले जन्ममें वह	उसी समय तुलसीके शरीरसे गण्डकीनदी उत्पन्न हुई और
सुदामा शंखचूड़ दानव बना। ब्रह्माजीकी प्रेरणासे भगवती	भगवान् श्रीहरि उसीके तटपर मनुष्योंके लिये पुण्यप्रद
तुलसीका शंखचूड़ दानवसे गान्धर्वविवाह सम्पन्न हुआ।	शालग्राम बन गये।
ब्रह्माजीका वरदान प्राप्तकर उस दानवराजने अपने पराक्रमद्वारा	इस अध्यायमें श्रीनारायणने नारदसे तुलसी एवं
देवताओंको स्वर्गसे निष्कासितकर उसपर अपना अधिकार	शालग्रामशिलाको विशेष महिमाका समारोहपूर्वक वर्णन
कर लिया। देवतागण त्रस्त होकर भगवान् विष्णुकी शरणमें	करते हुए भगवती तुलसीके पूजनका विधि-विधान तथा
* आज भी नेपालमें मुक्तिनाथधामके निकट गण्डकीनदीके तटा	

 सदा सेव्यं सदा सेव्यं देवीभागवतं नरै: * [श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण-सावित्री भी उनके पीछे जाने लगी। यहाँ सावित्रीसे स्तोत्रादिका वर्णन प्रस्तुत किया है। भगवती सावित्रीकी उपासना—नारदजीने प्रश्न धर्मराजकी वार्ता होती है। धर्मराज सावित्रीसे कहते हैं कि यदि तुम अपने पतिके साथ जानेकी इच्छा रखती किया—ऐसा सुना गया है कि सावित्री वेदोंकी जननी हैं। जगत्में सर्वप्रथम इनकी पूजा किसने की तथा हो तो पहले इस शरीरका त्याग करो। विनाशशील बादमें किन लोगोंने इनकी पूजा की? श्रीनारायणने मनुष्य अपने इस नश्वर तथा पांचभौतिक शरीरको कहा-हे मुने! सर्वप्रथम ब्रह्माजीने वेदमाता सावित्रीकी लेकर मेरे लोक कभी नहीं जा सकता। प्राणी कर्मके पूजा की, इसके बाद वेदोंने, तदनन्तर विद्वज्जनोंने इनका अनुसार ही जन्म प्राप्त करता है और कर्मानुसार ही पूजन किया। तत्पश्चात् भारतवर्षमें राजा अश्वपतिने मृत्युको भी प्राप्त होता है। सुख-दु:ख, भय और शोक इनका पूजन किया। इसके बाद चारों वर्णींके लोग भी कर्मसे ही मिलते रहते हैं। अपने कर्मानुसार ही इनकी पूजा करने लगे। प्राणीको जंगम, पर्वत, राक्षस, किन्नर, वृक्ष, पशु-पक्षी, नारदजीके प्रश्न करनेपर श्रीनारायणने कहा—मद्रदेशमें कीट-पतंग, दैत्य-दानव आदि योनियाँ प्राप्त होती हैं। अश्वपति नामके एक महान् राजा हुए। उनकी मालती यमराजकी बात सुनकर पतिव्रता सावित्रीने परम भक्तिके साथ उनकी स्तुति की तथा कर्म आदिके सम्बन्धमें नामक महारानी थीं, उन्हें कोई सन्तान नहीं थी। वे पुष्करक्षेत्रमें जाकर तपस्या करने लगे। संयोगवश वहाँ बहुत सारे प्रश्न पूछे। सावित्रीकी बुद्धि और जिज्ञासाको पराशरमुनि आ गये। उन्होंने राजाको गायत्रीमन्त्रकी महिमा देखकर यमराजने अत्यधिक प्रसन्न होकर सावित्रीको बताते हुए दस लाख जप करनेकी प्रेरणा की और कहा सत्यवान्की सौभाग्यवती प्रियाके रूपमें सुशोभित होनेका वर प्रदान किया। इसके साथ ही दूसरा अभीष्ट वर कि इससे आपके तीन जन्मोंके पापोंका नाश हो जायगा और आप भगवती सावित्रीका साक्षात् दर्शन प्राप्त करेंगे। माँगनेके लिये सावित्रीसे कहा। सावित्रीने यमराजसे इसके साथ ही उन्होंने त्रिकाल-सन्ध्या करनेकी प्रेरणा दी निम्नलिखित वर माँगे और कहा—हे महाभाग! सत्यवान्से मुझे सौ पुत्र प्राप्त हों, मेरे पिताके भी सौ पुत्र हों, मेरे और कहा कि सन्ध्या न करनेवाला व्यक्ति अपवित्र रहता श्वस्रको नेत्रज्योति मिल जाय तथा उन्हें राज्य भी है और वह समस्त कर्मोंके लिये अयोग्य हो जाता है। वह जो भी सत्कर्म करता है, उसके फलका अधिकारी नहीं प्राप्त हो जाय। अन्तमें एक लाख वर्ष बीतनेके पश्चात् रह जाता। जो प्रात: एवं सायंकालकी सन्ध्या नहीं करता, में सत्यवान्के साथ भगवान् श्रीहरिके धाम चली जाऊँ। जीवके कर्मींका फल तथा संसारसे उसके उद्धारका वह शूद्रके समान है। पराशरमुनिने राजा अश्वपतिको कई प्रकारसे उपदेश उपाय सुननेके लिये मुझे बहुत कौतूहल हो रहा है, प्रदान करते हुए भगवती सावित्रीका पूजा-विधान, स्तोत्र अतः वह सब मुझे बतानेकी कृपा करें। धर्मराज बोले तथा मन्त्र बताया। इसीके अनुसार आराधना करनेपर कि हे महासाध्वी! तुम्हारे सभी मनोरथ पूर्ण होंगे। राजा अश्वपतिको भगवती सावित्रीका दर्शन हुआ तथा इसके अनन्तर कर्मफलके विषयमें बताते हुए धर्मराजने उनसे मनोभिलषित वर भी प्राप्त हुआ। सावित्रीकी कहा—भारतवर्षमें समस्त योनियोंमें मानवयोनि परम दुर्लभ कुपासे राजाकी पत्नीको कन्याकी प्राप्ति हुई, जिसका है। पुण्यभूमि भारतमें ही शुभ और अशुभ कर्मोंकी नाम राजा अश्वपतिने सावित्री रखा। युवावस्था प्राप्त उत्पत्ति होती है, अन्यत्र नहीं। दूसरी जगह लोग केवल होनेपर उसने अनेक गुणोंसे युक्त सत्यवान्का पतिरूपमें कर्मोंका फल भोगते हैं। शुभ कर्मोंके प्रभावसे प्राणी वरण किया। एक वर्षके अनन्तर किसी वृक्षसे गिर स्वर्ग आदि लोकोंमें जाता है तथा अशुभ कर्मींके कारण जानेके कारण सत्यवानुके प्राण निकल गये। उसके वह विभिन्न नरकोंमें पडता है। स्र्याश्रदीपांङ्गण न्रिंडद्यारी े Segven https://dsc.qq/dharma हे सिक्षी स्प्रामें ने श्री पेन्छीम त्रांपक्ष sस्रिक्ष

अङ्क] * श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण ((उत्तरार्ध)—सिंहावलोकन * ३५
********************************	**************************************
दो प्रकारके होते हैं। सकाम साधक वैकुण्ठधाममें जाकर	परपुरुष अथवा परस्त्रीगमन करता है, जो सहृदयके साथ
समयानुसार पुन: भारतवर्षमें लौट आते हैं। निष्काम	शठताका व्यवहार करता है, जो किसी विकलांगको
भक्तोंको पुन: इस लोकमें नहीं आना पड़ता।	देखकर हँसता है और उसकी निन्दा करता है, जो
चारों वर्णोंके लोग अपने-अपने धर्ममें संलग्न रहकर	लोभके वशीभूत होकर अपने भरण-पोषणके लिये जीवोंकी
ही शुभ कर्मोंका फल भोगनेके अधिकारी होते हैं। जो	हत्या करता है, जो अपनी कन्याको धनके लोभसे बेच
अपने कर्तव्यकर्मोंसे विमुख हैं, वे अवश्य ही नरकमें	देता है, जो व्रतों, उपवासों और श्राद्धोंके अवसरपर
जाते हैं और अपने कर्मोंका फल भोगते हैं। वे भारतवर्षमें	क्षौरकर्म करता है, जो दयाहीन मनुष्य विषके द्वारा किसी
नहीं आ सकते। अत: चारों वर्णोंके लोगोंको अपने-	प्राणीकी हत्या करता है, जो किसी दूसरेकी पैतृक
अपने धर्मोंका पालन करना चाहिये।	सम्पत्तिका हरण तथा दूसरेके सामानकी चोरी करता है
दिव्य लोकोंकी प्राप्ति करानेवाले कर्म—इसके	एवं इस प्रकारके और भी कई पाप करता है तो इन
अनन्तर धर्मराज दिव्य लोकोंकी प्राप्ति करानेवाले	पापोंको करनेवाला व्यक्ति विभिन्न नरकोंमें पड़कर दारुण
पुण्यकर्मोंके अन्तर्गत दानका वर्णन करते हुए कहते हैं	कष्ट भोगता है। यहाँ धर्मराजने छियासी नरककुण्डों तथा
कि जो व्यक्ति ब्राह्मणको अन्न, आसन, गो, वस्त्र, छत्र,	उनके लक्षणोंका वर्णन करते हुए उनके नाम भी गिनाये
वस्त्रसहित शालग्राम, सज्जा, दीपक, हाथी, घोड़ा, शिबिका,	हैं। अन्तमें धर्मराज सावित्रीको भगवतीकी भक्ति प्रदान
वाटिका, चँवर, पंखा, धान्य, रत्न, तिल, फल, भवन,	करते हैं और उनकी महिमाका वर्णन करते हुए कहते
भूमि आदिका दान देता है। वह इस पुण्यकर्मसे दिव्य	हैं—स्वयं परमपुरुष ही प्रकृति हैं। वे दोनों परस्पर उसी
लोकोंकी प्राप्ति करता है। इसी प्रकार जो व्यक्ति भगवती	प्रकार अभिन्न हैं, जैसे—अग्निसे उसकी दाहिका शक्ति
जगदम्बा, भगवान् विष्णु, भगवान् शंकर, भगवान् श्रीराम	अभिन्न है। वे ही सच्चिदानन्दस्वरूपिणी शक्ति महामाया
अथवा भगवान् श्रीकृष्णकी पूजा-उपासना करता है,	हैं, वे निराकार होते हुए भी भक्तोंपर कृपा करनेके लिये
उससे उसे उनके दिव्य लोकोंकी प्राप्ति होती है। इसी	अनेक रूप धारण करती हैं। भगवती दुर्गाकी भावना
प्रकार जो व्यक्ति प्रतिदिन गंगास्नान करता है; रामनवमी,	करके जो स्त्री भक्तिपूर्वक उनका पूजन करती है, वह
जन्माष्टमी, शिवरात्रि, एकादशी एवं रविवार आदिका	इस लोकमें सुख भोगकर अन्तमें ऐश्वर्यमयी भक्तिके
व्रत करता है तथा प्रतिदिन पार्थिव लिंग बनाकर शिवकी	परमपदको प्राप्त होती है।
पूजा करता है। शालग्रामशिलाका पूजन तथा उसके	ऐसा कहकर धर्मराज अपने लोकको चले गये
जलका पान करता है, वह दिव्य लोकोंमें जानेका	और अपने पतिको साथ लेकर सावित्री भी अपने घर
अधिकारी होता है।	चली गयी। पुण्यक्षेत्र भारतवर्षमें एक लाख वर्षतक सुख
अशुभ कर्मोंका फल—इसके बाद यमराज विभिन्न	भोगकर वह पतिव्रता सावित्री अपने पतिके साथ देवीलोक
प्रकारके पापोंका तथा नरकोंका वर्णन करते हुए कहते हैं	चली गयी।
कि जो व्यक्ति अपने बन्धु-बान्धवोंको अपमानपूर्वक कटु	सविताकी अधिष्ठात्री देवी होने अथवा सूर्यके
वचन कहता है, घर आये भूखे-प्यासे व्यक्तिको भोजन	ब्रह्मप्रतिपादक गायत्रीमन्त्रकी अधिदेवता होने तथा सम्पूर्ण
नहीं कराता, जो भगवती जगदम्बा, भगवान् विष्णु, शिव	वेदोंकी जननी होनेसे ये जगत्में सावित्री नामसे
तथा वेद-पुराणोंकी निन्दा करता है, जो किसीकी वृत्तिको	प्रसिद्ध हैं।
छीनता है, जो माता-पिता, गुरु, पत्नी, पुत्र, पुत्री तथा	भगवती लक्ष्मीके प्राकट्यकी कथा तथा
अनाथका भरण-पोषण नहीं करता, जो अतिथिको देखकर	दुर्वासाके शापसे इन्द्रका श्रीहीन हो जाना—इसके
उसके प्रति उपेक्षाभावसे दृष्टिको वक्र कर लेता है, जो	अनन्तर भगवती राधाके दाहिने अंशसे लक्ष्मीका प्राकट्य

३६	त्र्यं देवीभागवतं नरैः * [श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण-
\$	***********************************
तथा भगवान् कृष्णके दाहिने अंशसे भगवान् विष्णुका	शिव तथा देवताओंके द्वारा पूजा तथा स्तुति किये जानेपर
प्राकट्य होता है।	देवी लक्ष्मीने देवताओंके भवनपर अपनी कृपादृष्टि डाली।
प्राचीन कालकी बात है कि तीनों लोकोंके अधिपति	फलस्वरूप वे देवगण मुनि दुर्वासाके शापसे मुक्त हो
इन्द्र मधुपानसे प्रमत्त होकर वैकुण्ठधामसे कैलासपर्वतकी	गये तथा सभी अपने-अपने लोकोंको चले गये।
ओर जा रहे थे। उन्होंने मार्गमें दुर्वासामुनिको देखकर	भगवती स्वाहाका उपाख्यान —नारदजी कहते
उन्हें प्रणाम किया। दुर्वासाने प्रसन्न होकर इन्द्रको आशीर्वाद	हैं—सभी धार्मिक कर्मोंमें हवनके समय स्वाहादेवी,
दिया तथा भगवान् विष्णुद्वारा प्रदत्त परम मनोहर पारिजात	श्राद्धकर्ममें स्वधादेवी तथा यज्ञादि कर्मोंमें दक्षिणादेवी
पुष्प भी उन्हें समर्पित किया। मदोन्मत्त इन्द्रने उसे	प्रशस्त मानी गयी हैं।
ऐरावत हाथीके ऊपर फेंक दिया। यह देखकर दुर्वासामुनि	सृष्टिके प्रारम्भमें देवतागण ब्रह्माजीके पास आये
अत्यन्त कुपित हो गये और उन्होंने इन्द्रको शाप दे	तथा अपने आहारके लिये प्रार्थना की। उन दिनों ब्राह्मणोंद्वारा
दिया कि हे इन्द्र! तुमने अभिमानवश इस पारिजात-	अग्निमें जो हवि प्रदान की जाती थी, उसे देवता प्राप्त नहीं
पुष्पको हाथीपर डाल दिया। अतः लक्ष्मीजी तुमलोगोंका	कर पाते थे। इस प्रकार वे आहारसे वंचित रह जाते थे।
परित्याग करके भगवान् श्रीहरिके लोकमें चली जायँ।	देवताओंकी यह प्रार्थना सुनकर ब्रह्माजीने श्रीकृष्णके
मुनि दुर्वासाके शापसे इन्द्र श्रीहीन हो गये और	आदेशानुसार मूलप्रकृति भगवतीकी आराधना की। जिसके
अमरावतीपर दैत्योंका शासन हो गया। देवतागण गुरु	फलस्वरूप स्वाहादेवी मूलप्रकृतिकी कलासे प्रकट हो
बृहस्पति और ब्रह्माजीको साथ लेकर भगवान् विष्णुके	गयीं। ब्रह्माजीने उनसे प्रार्थना की कि आप अग्निकी परम
पास गये और उनसे प्रार्थना की। भगवान् विष्णुने	सुन्दर दाहिकाशक्ति हो जाइये; क्योंकि अग्निदेव आहुतियोंको
कहा—जहाँ शंखध्विन नहीं होती, तुलसी नहीं रहती,	भस्म करनेमें समर्थ नहीं हैं। स्वाहादेवीने इसे स्वीकार नहीं
शिवकी पूजा नहीं होती, अतिथियोंको भोजन नहीं कराया	किया तथा वे श्रीकृष्णकी उपासनामें संलग्न हो गयीं।
जाता, जो साधक व्रत-उपवास नहीं करते, सन्ध्या-	स्वाहादेवीकी तपस्यासे प्रसन्न होकर भगवान् श्रीकृष्णने
वन्दन नहीं करते, सदा अपवित्र रहते हैं, जो परमात्म-	कहा कि वराहकल्पमें तुम मेरी भार्या बनोगी, इस समय
प्रभुकी भक्तिसे रहित हैं, जो दूसरोंकी निन्दा करता है,	तुम दाहिकाशक्तिके रूपमें अग्निदेवकी मनोहर पत्नी बनो।
द्वेषभाव रखता है, जीवोंकी हिंसा करता है तथा प्राणियोंके	इस प्रकार स्वाहादेवीका पाणिग्रहण अग्निसे हो गया,
प्रति दयाभाव नहीं रखता, वहाँसे भगवती लक्ष्मी दूर	तभीसे अग्निमें हवन करनेपर मन्त्रके अन्तमें 'स्वाहा' शब्द
चली जाती हैं।	जोड़कर मन्त्रोच्चारण करनेपर देवताओंको आहुतियाँ मिलने
यह कहकर भगवान् विष्णुने भगवती लक्ष्मीको	लगीं और वे सन्तुष्ट हो गये।
क्षीरसागरके यहाँ जन्म लेनेकी आज्ञा प्रदान की तथा	भगवती स्वधाका उपाख्यान —सृष्टिके आरम्भमें
देवताओंको समुद्रमन्थन करनेका सुझाव दिया। भगवान्के	जगद्विधाता ब्रह्माने पितरोंके लिये श्राद्ध-तर्पण आदिका
आज्ञानुसार समस्त देवताओंने राक्षसोंके साथ मन्दराचल-	विधान किया, परंतु किसी व्यक्तिद्वारा जो श्राद्धीय पदार्थ
पर्वतको मथानी, कच्छपको आधार और शेषनागको	अर्पण किया जाता था, उसे पितृगण प्राप्त नहीं कर पाते
मथानीकी रस्सी बनाकर समुद्रमन्थन किया, जिसके	थे; अत: क्षुधासे व्याकुल सभी पितरोंने ब्रह्माजीकी सभामें
फलस्वरूप अमृत, नानाविध रत्न आदि अनेक वस्तुएँ	जाकर उनको सारी बात बतायी। तब ब्रह्माजीने एक मनोहर
प्राप्त हुईं। साथ ही समुद्रसे भगवती लक्ष्मीका प्राकट्य	मानसी कन्याका सृजन किया। मूल-प्रकृतिकी अंशरूपा
हुआ, जिन्होंने क्षीरसागरमें शयन करनेवाले सर्वेश्वर	स्वधा नामक ये देवी पितरोंकी पत्नीस्वरूपा और कमलके
विष्णुको वरमाला समर्पित कर दी। तत्पश्चात् ब्रह्मा,	समान सुन्दर थीं। ब्रह्माजीने उस तुष्टिरूपिणी देवीको

अङ्क] * श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण	(उत्तरार्ध)—सिंहावलोकन * ३७
\$	**************************************
सन्तुष्ट पितरोंको समर्पित कर दिया तथा द्विजोंको यह	शक्तिस्वरूपा होकर उनकी सहायता की थी, जिससे
गोपनीय उपदेश भी प्रदान किया कि पितरोंको कव्यपदार्थ	भगवान् शिव उस दैत्यका वध कर सके। तदनन्तर स्वयं
अर्पण करते समय स्वधायुक्त मन्त्रका उच्चारण करना	भगवान् शिवने उनका पूजन किया था।
चाहिये। तभीसे द्विजगण उसी क्रमसे पितरोंको कव्य प्रदान	भगवती मनसाका उपाख्यान —भगवती मनसा
करने लगे।	महर्षि कश्यपकी मानसी कन्या हैं। वे मनसे ध्यान करनेपर
देवताओंके लिये हव्य प्रदान करते समय स्वाहा	प्रकाशित होती हैं, इसीलिये मनसादेवी नामसे विख्यात हैं।
और पितरोंको कव्य प्रदान करते समय स्वधाका उच्चारण	राजा जनमेजयके यज्ञमें इन्होंने नागोंकी प्राणरक्षा की थी,
श्रेष्ठ माना गया है।	अत: ये नागेश्वरी कही जाती हैं। इन्होंने भगवान् शिवसे
भगवती दक्षिणाका उपाख्यान —अत्यन्त दुष्कर	सिद्धयोग प्राप्त किया था, अतः ये सिद्धयोगिनीके नामसे
यज्ञ करनेपर भी जब देवताओंको यज्ञफल नहीं प्राप्त हुआ,	जानी जाती हैं। मुनीश्वर आस्तीककी माता होनेके कारण
तब वे उदास होकर ब्रह्माजीके पास गये। देवताओंकी	ये आस्तीकमाता नामसे जगत्में विख्यात हैं। ये महात्मा
प्रार्थना सुनकर ब्रह्माने भगवान् श्रीहरिका ध्यान किया।	जरत्कारुकी प्रियपत्नी थीं, इसलिये ये जरत्कारुप्रिया
भगवान् नारायणने महालक्ष्मीके विग्रहसे मर्त्य-लक्ष्मीको	कहलाती हैं। इनकी रोचक कथा विस्तारपूर्वक ४८वें
प्रकट किया, जिसका नाम उन्होंने दक्षिणा रखकर ब्रह्माजीको	अध्यायमें प्रस्तुत की गयी है।
सौंप दिया। ब्रह्माजीने भी यज्ञकार्योंकी सम्पन्नताके लिये	आदि गौ सुरभिका आख्यान— देवी सुरभि
दक्षिणाको यज्ञपुरुषको समर्पित कर दिया, जिससे दक्षिणासे	गौओंको अधिष्ठात्री देवी हैं। इनका प्राकट्य परब्रह्म
युक्त यज्ञपुरुष सभी प्राणियोंको उनके कर्मोंका फल प्रदान	परमात्मा भगवान् श्रीकृष्णकी दुग्धपानकी इच्छापूर्तिके
करने लगे। कर्ताको चाहिये कि कर्म करके तुरंत दक्षिणा	लिये उनके ही वामभागसे हुआ था। इनका दूध जन्म-
दे दे, ऐसा करनेसे कर्ताको उसी क्षण फल प्राप्त हो जाता	मृत्यु तथा बुढ़ापेको हरनेवाला, अमृतसे बढ़कर था।
है। जो कर्म बिना दक्षिणाके सम्पन्न होता है, उसके	पूर्वकालमें भगवान् श्रीकृष्णने देवी सुरभिकी पूजा की
फलका भोग राजा बलि करते हैं। दक्षिणायुक्त कर्ममें ही	थी, तभीसे तीनों लोकोंमें देवी सुरभिकी पूजाका प्रचार
फल-प्रदानका सामर्थ्य होता है।	हो गया।
भगवती षष्ठीका उपाख्यान—भगवती षष्ठी मूल-	भगवती राधा तथा भगवती दुर्गाका उपाख्यान—
प्रकृतिके छठे अंशसे आविर्भूत हैं, ये बालकोंकी	जगत्की उत्पत्तिके समय मूलप्रकृतिस्वरूपिणी ज्ञानमयी
अधिष्ठात्री देवी हैं। ये स्वामी कार्तिकेयकी भार्या हैं,	भगवतीसे प्राण तथा बुद्धिकी अधिष्ठात्री देवियोंके रूपमें
और देवसेनाके नामसे विख्यात हैं। ये बालकोंको आयु	दो शक्तियाँ प्रकट हुईं। श्रीराधा भगवान् श्रीकृष्णके
प्रदान करती हैं और उनका भरण, पोषण तथा रक्षण	प्राणोंकी तथा श्रीदुर्गा उनकी बुद्धिकी अधिष्ठात्री देवी हैं।
भी करती हैं। ये सिद्धयोगिनी हैं, स्वायम्भुव मनुके पुत्र	वे शक्तियाँ ही सम्पूर्ण जीवोंको सदा नियन्त्रित तथा प्रेरित
प्रियव्रतके मृतपुत्रको इन्होंने जीवनदान दिया तथा तभीसे	करती हैं। विराट् आदि चराचरसहित सम्पूर्ण जगत् उन्हीं
सर्वत्र इनकी पूजा होने लगी। यह कथा नवमस्कन्धके	शक्तियोंके अधीन है। जबतक उन दोनों शक्तियोंकी
४६वें अध्यायमें विस्तारपूर्वक लिखी गयी है।	कृपा नहीं होती, तबतक मोक्ष दुर्लभ रहता है। अतएव
भगवती मंगलचण्डीका उपाख्यान— भगवती	उन दोनोंकी प्रसन्नताके लिये उनकी निरन्तर उपासना
मंगलचण्डी मूलप्रकृति दुर्गाका ही एक रूप हैं, ये	करनी चाहिये।
स्त्रियोंकी अभीष्ट देवता हैं। त्रिपुरासुरके वधके लिये	भगवती श्रीराधा भगवान् श्रीकृष्णके प्राणोंकी
भगवान् शिवने इन्हींका आराधन किया और इन भगवतीने	अधिष्ठात्री देवी हैं। ब्रह्मा आदि समस्त देवता भी सदा

* सदा सेव्यं सदा सेव्यं देवीभागवतं नरै: * [श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण-प्रसन्नतापूर्वक उन श्रीराधिकाका ध्यान करते रहते हैं। मार्ग अवरुद्ध कर दिया। इससे सारे संसारमें त्राहि-त्राहि राधिकाकी पूजाके बिना श्रीकृष्णकी पूजाका अधिकार मच गयी। एक ओर प्रचण्ड गरमी पड़ने लगी तो दूसरी नहीं है। अत: सभीको भगवती राधाका पूजन अवश्य ओर रात्रि ही बनी रही। यह देखकर सभी देवता भगवान् विष्णुके पास गये और उन्हें सारी बात बतायी। भगवान् करना चाहिये। भगवती दुर्गा समस्त प्राणियोंकी बुद्धिकी अधिष्ठात्री विष्णुने देवताओंको भगवतीके परम उपासक वाराणसीमें देवी तथा अन्तर्यामीस्वरूपिणी हैं। ये घोर संकटसे रक्षा निवास करनेवाले अगस्त्यजीके पास भेजा। देवताओंने करती हैं। अत: जगत्में दुर्गा नामसे विख्यात हैं। ये सभी अगस्त्यजीसे विन्ध्याचलकी वृद्धिको रोकनेकी प्रार्थना की। वैष्णवों तथा शैवोंकी उपास्य हैं, मूलप्रकृतिस्वरूपिणी हैं अगस्त्यजी बडे धर्मसंकटमें पड गये; क्योंकि उन्हें इसके तथा जगत्का सृजन, पालन एवं संहार करनेवाली हैं। लिये काशीका त्याग करके दक्षिणमें जाना पड़ रहा था। दशम स्कन्ध लोकहितके लिये वे अपनी पत्नी लोपामुद्राको साथ लेकर दक्षिणके लिये प्रस्थान कर गये। विन्ध्यपर्वत उन्हें सामने दशम स्कन्धका प्रारम्भ नारदजीकी इस जिज्ञासासे होता है कि सभी मन्वन्तरोंमें देवी कौन-कौन-सा स्वरूप देखकर सद्भावनत होकर साष्टांग लेट गया। अगस्त्यजीने धारण करती हैं तथा किन-किन स्वरूपोंमें माहेश्वरीका विन्ध्याचलसे कहा—हे वत्स! जबतक मैं लौटकर आता प्रादुर्भाव होता है। श्रीनारायण वर्णन करते हुए कहते हैं-हूँ तबतक तुम इसी प्रकार रहो; क्योंकि हे पुत्र! मैं तुम्हारे पूर्वकालमें भगवान् विष्णुके नाभिकमलसे ब्रह्माजीका प्राकट्य ऊँचे शिखरपर चढ़नेमें असमर्थ हूँ। इस प्रकार कहकर वे हुआ। चतुर्मुख ब्रह्माने स्वायम्भुव नामक मनुको अपने अगस्त्यमुनि उस विन्ध्यके शिखरोंपर होते हुए मलयाचलपर मनसे उत्पन्न किया। इस बार वे मनु परमेष्ठी ब्रह्माके आकर आश्रममें निवास करने लगे। मानसपुत्र कहलाये। पुनः ब्रह्माजीने धर्मस्वरूपिणी शतरूपाको मनुद्वारा पुजित वे भगवती भी वहीं विन्ध्यगिरिपर आ उत्पन्न किया और उन्हें मनुकी पत्नीके रूपमें प्रतिष्ठित गयीं। वे ही देवी समस्त लोकोंमें विन्ध्यवासिनी नामसे किया। तत्पश्चात् वे मनु क्षीरसागरके पवित्र तटपर भगवती विख्यात हो गयीं। जगदम्बाकी आराधना करने लगे। उनकी तपस्यासे प्रसन्न अन्य मनुओंद्वारा भगवतीकी आराधना—आद्य होकर भगवती जगदम्बा प्रकट हो गयीं तथा उन्हें यह वर स्वायम्भुव मनुके बाद उनके पौत्र अर्थात् प्रियव्रतके पुत्र प्रदान किया कि सृष्टिकार्यमें आनेवाले सभी विघ्न क्षीण स्वारोचिष दूसरे मनु बने। उन्होंने यमुनातटपर सूखे पत्तोंका होकर नष्ट हो जायँ। इस प्रकार उन महात्मा मनुको वर आहार करते हुए भगवतीकी बारह वर्षींतक आराधना की। देकर वे विन्ध्यपर्वतपर चली गयीं। उनकी इस तपस्यासे प्रसन्न होकर भगवतीने उन्हें मन्वन्तराधिप विन्ध्याचलका आख्यान-एक बार देवर्षि नारद बननेका वरदान दिया। इनके बाद उनके भाई उत्तम तीसरे पृथ्वीलोकमें विचरण करते हुए विन्ध्यपर्वतपर पहुँच गये। मनु हुए। उन्होंने तीन वर्षतक भगवतीके वाग्भवमन्त्रका विन्ध्यपर्वतके आग्रह करनेपर नारदजीने बताया कि सम्पूर्ण जपकर उनका अनुग्रह प्राप्त किया। उत्तमके बाद उनके विश्वकी आत्मा तथा समस्त ग्रह-नक्षत्रोंके अधिपति भाई तामस चौथे मनु हुए। नर्मदाके दक्षिणी तटपर कामबीज मन्त्रका जप करते हुए उन्होंने भगवती परमेश्वरीकी श्रीसूर्यनारायण सुमेरुपर्वतकी परिक्रमा करते हैं, जिसके कारण वह सुमेरुपर्वत अभिमानपूर्वक अपनेको पर्वतोंमें कृपा प्राप्त की। तामसके बाद उनके अनुज रैवत पाँचवें श्रेष्ठ तथा महान् मानता है। महर्षि नारदकी बात सुनकर मनु हुए। यमुनातटपर कामसंज्ञक बीजमन्त्रका जप करते हुए उन्होंने भगवतीकी आराधना की। रैवतके बाद चाक्षुष विन्ध्यपर्वत चिन्तित हो गया तथा उसने यह निश्चय किया कि मैं सूर्यका मार्ग अवरुद्ध करूँगा। विन्ध्याचलने अपना छठे मनु हुए। ब्रह्मर्षि पुलहकी सत्प्रेरणासे वे भगवतीकी

अङ्क] * श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण	। (उत्तरार्ध)—सिंहावलोकन * ३९
\$	**************************************
बीजमन्त्रका निरन्तर जप किया। तब देवीने प्रसन्न होकर	नामके छ: पुत्र थे, जो क्रमश: दक्षसावर्णि, मेरुसावर्णि,
उन्हें दर्शन दिया। श्राद्धदेव (वैवस्वत) सातवें मनु हुए।	सूर्यसावर्णि, इन्द्रसावर्णि, रुद्रसावर्णि और विष्णुसावर्णिके
पराम्बा भगवतीकी तपस्यासे उनकी अनुकम्पा प्राप्त करके	नामसे प्रसिद्ध हैं। इन सबने भक्तिभावसे भगवतीकी
वे मन्वन्तराधिप हुए। आठवें मनु सावर्णि हुए। पूर्वजन्ममें	आराधना की, जिसके फलस्वरूप वे सब क्रमश: नौवें,
वे सुरथ नामक राजा थे। उन्होंने भगवतीकी पार्थिव मूर्ति	दसवें, ग्यारहवें, बारहवें, तेरहवें और चौदहवें मनु हुए।
बनाकर आराधना की थी। उन्हींकी कृपासे वे अगले	भगवती भ्रामरीका आख्यान —पूर्वकालमें अरुण
जन्ममें सावर्णि मनु हुए।	नामका एक महान् बलशाली दैत्य था। उसने ब्रह्माजीकी
मधु-कैटभका वध —प्रलयकालमें जब भगवान्	्तपस्या करके अद्भुत वरदान प्राप्त कर लिया था। युद्धमें
विष्णु शेषशय्यापर शयन कर रहे थे, उसी समय उनके	पुरुषसे, स्त्रीसे, दो पैर या चार पैरवाले प्राणियोंसे या उभय
कानोंकी मैलसे मधु-कैटभ नामक दो दानवोंकी उत्पत्ति	आकारवाले प्राणीसे उसकी मृत्यु नहीं हो सकती थी।
हुई, वे दानव भगवान् विष्णुकी नाभिसे उत्पन्न कमलपर	वरके प्रभावसे उन्मत्त हुए उस अरुण नामक दैत्यने सारे
आसीन भगवान् ब्रह्माका वध करनेको उद्यत हो गये, तब	संसारमें त्राहि-त्राहि मचा दी। तब देवताओंकी प्रार्थनापर
ब्रह्माजीने भगवान् विष्णुको जगाना चाहा, पर वे योगनिद्राके	भगवती भ्रामरीदेवीके रूपमें प्रकट हुईं। उनकी माला और
वशीभूत होनेसे जाग न सके। यह देख ब्रह्माजीने भगवती	हाथोंमें असंख्य षट्पद—भ्रमर स्थित थे, उन भ्रमरोंने अरुण
योगनिद्राकी स्तुतिकर भगवान् विष्णुको प्रबोधित किया	और उसकी सेनापर आक्रमणकर सबको मार डाला। इस
और भगवतीद्वारा मधु-कैटभको मोहित किये जानेपर	प्रकार भगवती भ्रामरीकी कृपासे देवताओं तथा सम्पूर्ण
भगवान् विष्णुने उनका वध किया।	जगत्को अरुणदैत्यके अत्याचारसे मुक्ति मिली।
भगवतीद्वारा महिषासुर, शुम्भ-निशुम्भ और चण्ड-	इस दशम स्कन्धमें ये सम्पूर्ण कथाएँ अत्यन्त
मुण्डका वध —पूर्वकालमें महिषासुर नामक एक दैत्य	विस्तारपूर्वक लिखी गयी हैं, जो यहाँ स्थानाभावके कारण
हुआ, जिसने देवताओंको जीतकर उन्हें स्वर्गसे निष्कासित	संक्षिप्तरूपमें प्रस्तुत की गयी हैं।
कर दिया। तब पराजित देवता भगवान् विष्णुके पास	एकादश स्कन्ध
गये। भगवान् विष्णुके परामर्शसे सभी देवताओंने अपना-	ग्यारहवें स्कन्धमें नारदजीके जिज्ञासा करनेपर श्रीनारायण
अपना तेज प्रकट किया। वही तेज पुंजीभूत होकर	जिस सदाचारके अनुष्ठानसे देवी सदा प्रसन्न रहती हैं,
भगवती महिषमर्दिनी दुर्गाके रूपमें प्रकट हुआ। सभी	उसका वर्णन करते हुए कहते हैं कि माता-पिता, पुत्र,
देवताओंने उन्हें अपने–अपने अस्त्र–शस्त्र समर्पित किये	पत्नी तथा बन्धु-बान्धव कोई भी अपना कल्याण करनेमें
और उनसे महिषासुरका वध करनेकी प्रार्थना की।	सहायक नहीं होता, केवल धर्म ही साथ रहता है। अत:
देवताओंके कष्ट-निवारणार्थ भगवतीने युद्धमें महिषासुरका	आत्मकल्याणके लिये समस्त साधनोंसे धर्मका नित्य
संहार किया। इसी प्रकार एक समय शुम्भ–निशुम्भ	संचय करना चाहिये।
नामके दो अत्यन्त शक्तिशाली दानव हुए, उन्होंने भी	'आचारः प्रथमो धर्मः' आचार ही प्रथम धर्म है—
देवताओंका राज्य छीनकर उन्हें स्वर्गसे निष्कासित कर	ऐसा श्रुतियों तथा स्मृतियोंमें कहा गया है। अतएव द्विजको
दिया, तब देवताओंकी प्रार्थनापर भगवतीने युद्ध करके	चाहिये कि वह अपने हितार्थ सदाचारके पालनमें सदा
सेनापतियों—धूम्राक्ष, रक्तबीज, चण्ड-मुण्डसहित शुम्भ-	संलग्न रहे। मनुष्य सदाचारसे आयु, अन्न, धन, सम्पत्ति,
निशुम्भका वध किया।	सन्तान आदि तथा अक्षय सुख प्राप्त करता है। आचार
वैवस्वत मनुके छः पुत्रोंका आख्यान—वैवस्वत	पापको भी नष्ट कर देता है।
मनुके करूष, पृषध्र, नाभाग, दिष्ट, शर्याति तथा त्रिशंकु	शास्त्रीय तथा लौकिक भेदसे आचार दो प्रकारका



४० * सदा सेव्यं सदा से	त्र्यं देवीभागवतं नरै: * [श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण-
***********************************	******************
बताया गया है—एक शौचाचार, दूसरा सदाचार। नारदजीके	धारणकर्ता साक्षात् शिवस्वरूप हो जाता है। रुद्राक्षको
यह पूछनेपर कि जगत्में शास्त्रोंका बाहुल्य है। अत:	भक्तिपूर्वक पवित्र अवस्थामें ही धारण करना चाहिये,
धर्ममार्गका निर्णय किस प्रकार किया जाय। इसपर	अपवित्र अवस्थामें इसे नहीं धारण करना चाहिये। शिव-
श्रीनारायणजी कहते हैं कि श्रुति, स्मृति और पुराण— इन	सम्बन्धी मन्त्रोंकी सिद्धिके लिये रुद्राक्षकी ही जपमाला
तीनोंमें जो कुछ भी कहा गया है; वही धर्म है। इसके	बनानी चाहिये।
अतिरिक्त कहीं भी नहीं। इन तीनोंमें जहाँ परस्पर विरोध	रुद्राक्ष–धारणका इतना माहात्म्य है कि यह समस्त
हो, वहाँ श्रुतिको प्रमाण मानना चाहिये। इसी प्रकार स्मृति	पापोंको नष्टकर शिव-सायुज्यकी प्राप्ति करा देता है।
तथा पुराणमें विरोध होनेपर स्मृति श्रेष्ठ है। वेद ही	इस सम्बन्धमें एक कथा है कि विन्ध्यपर्वतपर एक
पूर्णरूपसे धर्ममार्गके प्रमाण हैं। उस वेदराशिसे विरोध न	गर्दभ रुद्राक्ष ढोया करता था, एक दिन रुद्राक्ष ढोते हुए
रखनेवाला जो कुछ भी है, वही प्रमाण है, दूसरा नहीं।	लड़खड़ाकर गिरनेसे उसकी मृत्यु हो गयी, परंतु रुद्राक्षके
विद्वान् पुरुषको ब्राह्ममुहूर्तमें उठकर आचार-सम्बन्धी	स्पर्शके प्रभावसे उसकी महिमा न जानते हुए भी वह
सभी नियमोंका पालन करना चाहिये। प्रात:काल योगी	गर्दभ शिवस्वरूप धारणकर शिवलोक चला गया। एक
पुरुष अपने इष्टदेवका चिन्तन करे तथा ब्रह्मका ध्यान	अन्य आख्यानके अनुसार कोसलदेशमें गुणनिधि नामक
करे। ऐसा निरन्तर करनेसे जब जीव तथा ब्रह्मका ऐक्य	एक ब्राह्मण था। उस पापीसे कोई भी महापातक छूटा
स्थापित हो जाता है, तब उसी क्षण वह जीवन्मुक्त हो	नहीं था, जब उसकी मृत्यु हुई तो यमदूत उसे नारकीय
जाता है। इस अध्यायमें उषाकाल, अरुणोदयकाल, प्रात:काल	ताड़ना देनेके लिये ले जाने लगे तो उसी समय शिवदूत
तथा सूर्योदयकालका समय बताया गया है। इसके साथ	वहाँ आ पहुँचे और बोले कि जिस स्थानपर इसकी
ही मल-मूत्रके त्याग, दन्तधावन, स्नान तथा आचमन	मृत्यु हुई है, वहाँ दस हाथ नीचे रुद्राक्ष विद्यमान है,
आदिकी विधिका वर्णन हुआ है। श्रीनारायण कहते हैं कि	उसीके प्रभावसे हमलोग इसे शिवके धाम ले जायँगे।
प्रात:स्नान न करनेवालेकी सभी क्रियाएँ निष्फल हो जाती	भस्म-धारण एवं उसका माहात्म्य— भगवान्
हैं। अतएव प्रात:कालीन स्नान अवश्य करना चाहिये।	शंकरकी प्रीति प्राप्त करनेके लिये भस्मधारण करना
स्नानके अनन्तर सन्ध्या-वन्दन तथा गायत्रीमन्त्रके जपकी	अत्यन्त आवश्यक माना गया है। इसे शिरोव्रत कहा गया
विधि बतायी गयी है। गायत्रीमन्त्रसे बढ़कर इस लोक	है। भस्मधारणका इतना माहात्म्य है कि ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र
तथा परलोकमें दूसरा कुछ भी नहीं है; क्योंकि यह	आदि सभी देवता भी भस्म धारण करते हैं। देवताओंमें
उच्चारण करनेवालेकी रक्षा करता है, अत: इसे गायत्रीनामसे	देवत्वकी प्रतिष्ठा उनके भस्म धारण करनेके कारण ही
अभिहित किया जाता है।	कही गयी है। जो तीनों सन्ध्याओंके समय भस्मसे त्रिपुण्ड्र
रुद्राक्ष-माहात्म्य —भगवान् शंकर त्रिपुरासुरके वधके	धारण करता है, वह समस्त पापोंसे मुक्त होकर शिवलोकमें
लिये एक हजार दिव्य वर्षींतक अघोरास्त्र नामक महान्	प्रतिष्ठित हो जाता है। सम्पूर्ण शरीरमें भस्मलेपनको
अस्त्रका चिन्तन करते रहे, उस समय अत्यन्त व्याकुल	भस्मस्नानकी संज्ञा दी गयी है। यहाँ भस्मस्नानकी अत्यधिक
होकर उनके नेत्रोंसे अश्रुपात होने लगा। उनके दाहिने	महिमा बताते हुए दुर्वासामुनिके एक आख्यानका भी
नेत्रसे कपिलवर्ण, बायें नेत्रसे श्वेतवर्ण तथा तीसरे नेत्रसे	वर्णन किया गया है।
कृष्णवर्णके रुद्राक्ष उत्पन्न हुए। ये रुद्राक्ष एकसे लेकर	सन्ध्योपासन और उसका माहात्म्य—विप्र वृक्ष
चौदह मुखतकके होते हैं, जो शिवके विभिन्न स्वरूप हैं।	है, सन्ध्याएँ ही उसकी जड़ हैं; वेद उसकी शाखाएँ हैं
इन्हें सिर, हृदय, बाहुवलय तथा मणिबन्धपर धारण करना	और सभी धर्म-कर्म उसके पत्ते हैं। अतः प्रयत्नके साथ
वाहिये। इनके धारणका अनन्त फल होता है और	मूल (जड़)-की रक्षा करनी चाहिये; क्योंकि मूलके कट